स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म
पाठ्यक्रम

सर्वेक्षण और मूल्यांकन

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE,
BUT PLEASE CREDIT SOURCE

पाठ 1
पाठ्यक्रम रूपरेखा

		पाठ	गृह कार्य
1.	परिचय	रूपरेखा/सर्वेक्षण के लिये बाइबलीय आधार	
2.	बाइबलीय आधार	सर्वेक्षण और मूल्यांकन के लिये बाइबलीय आधार	
3.		फसल की कटनी के खेत में सर्वेक्षण करना	
4.		फसल की कटनी के खेत को समझना	
5.		फसल कटाई के लिये श्रमबल का सर्वेक्षण	
6.		जैसे कि यीशु की आँखों से देखना	
7.		सर्वेक्षण के लिए बाइबलीय दृष्टिकोण	
8.	प्रायोगिक	सर्वेक्षण करने के लिए तैयार होना	
9.		जानकारी एकत्र करने के लिए सामान्य मार्गदर्शन	
10.		सर्वेक्षण में एंगल स्केल का उपयोग करना	
11.	आत्मिक मानचित्रण	आत्मिक मानचित्रण	
12		आत्मिक मानचित्रण और गढ़ों को तोड़ना	
13.		प्रार्थना चहलकदमी (प्रेयर वॉक)	
14.	UUPGs	मसीही उपस्थिति विहिन तथा सुसमाचारीय पहुंच से रहित जाति समूह	
15	समापन	सर्वेक्षण और विश्वास	

परिशिष्ट

भारत के कुछ UUPGs	स्थानीय कलीसियाओं की स्थिति को समझना
फसल कटाई के लिये श्रमबल की जानकारी एकत्र करना	जनसांख्यिकीय तथा संजातीय सर्वेक्षण
लक्षित क्षेत्र में फसल कटाई के श्रमबल की स्थिति को समझना	जनसांख्यिकीय तथा संजातीय सर्वेक्षण करना
फसल कटाई के लिये श्रमबल की स्थिति को बेहतर रीति से समझना	सर्वेक्षण कार्यान्वित करने संबंधित सलाहें

सर्वेक्षण : रणनीतिक उद्देश्यों के लिए जानकारी एकत्रित तथा व्यवस्थित करना

सर्वेक्षण क्या है? सर्वेक्षण की साधारण परिभाषा जानकारियां एकत्रित करना है।

1. जब महान आदेश के कार्यकर्ता और कलीसियाएं महान आदेश को पूरा करने के इरादे में पक्के होते हैं तब सर्वेक्षण हमारी सेवकाई में अधिक ध्यान केन्द्रित करने में सहायक हो सकता है।
2. सर्वेक्षण विशेषकर मसीही कार्यकर्ताओं की सहायता करता है कि परमेश्वर उनके क्षेत्र और देश में क्या कर रहा है इसके बड़े चित्र को समझ सकें और यह देख सकें कि अभी और किस जाति-समूह में सुसमाचार पहुंचाने की आवश्यकता है। सर्वेक्षण हमारी सहायता कराता है कि हम अपने कार्य में केंद्रित रहें, और निश्चित कराता है कि हमारी रणनितियां प्रभावकारी बनी रहें।
3. बहुधा जब परमेश्वर लोगों को नई सेवकाइयों में बुलाता है तब वह उन्हें उनके आस-पास की परिस्थितियों और आवश्यकताओं पर सर्वेक्षण करने और उनका मूल्यांकन करने में ले जाता है। हम विश्वास करते है कि कलीसिया-रोपण में यही होता है।

सर्वेक्षण के लिए बाइबलीय आधार : नीचे वर्णन किए गए सभी बाइबलीय उदाहरणों में, जब परमेश्वर ने किसी विशेष समय में कार्य किया तब सर्वेक्षण उसकी योजना का एक भाग था।

1. कनान देश को अधिकार में लेने के पहले, परमेश्वर ने युद्ध की तैयारी करने हेतु इस्राएलियों को उपलब्ध सैनिकों की गिनती करने कहा (गिनती 1:1-46)।
2. परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कनान देश से प्रत्यक्ष जानकारी जुटाने के लिए वहां जासूसों को भेज (गिनती 13:1-26)।
3. इसके पहले कि यीशु ने अपने चेलों को लोगों के मध्य भेजा, उसने स्वयं उनके मध्य चल-फिरकर उनकी आवश्यकताओं को देखा (मत्ती 9:35-10:1)।
4. जब प्रभु ने आरंभिक कलीसिया में लोगों की संख्या को बढ़ाया तब कलीसिया ने संख्यात्मक वृद्धि का हिसाब रखा और जानकारी दी (प्रेरित 2:41,47; 4:4; 5:14; 9:31)।

पाठ 2
सर्वेक्षण और मूल्यांकन के लिये बाइबलीय आधार

परिचय : पिछले पाठ में हमने परमेश्वर की संतानों के द्वारा सर्वेक्षण किये जाने के चार बाइबलीय उदाहरण देखे।

बाइबलीय उदाहरण - 1 कनान देश को अधिकार मे लेने के पूर्व परमेश्वर ने इस्राएलियों से उनके पास युद्ध के लिए उपलब्ध सैनिकों की गिनती करने कहा (गिनती 1:1-46)।	**तात्पर्य** सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारियां सहायता कर सकती हैं कि हमें उन लोगों का पता चल सके जो कलीसिया-रोपण के कार्य में सहायता पहुंचाने हेतु उपलब्ध हैं (फसल कटाई के लिये श्रमबल)।
बाइबलीय उदाहरण - 2 परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कनान देश से प्रत्यक्ष जानकारी जुटाने के लिए वहां जासूसों को भेज (गिनती 13:1-26)।	**तात्पर्य** आपके नियोजित क्षेत्र के ''फसल की कटनी के खेत'' तक पहुंचने के लिए सर्वेक्षण आवश्यक जानकारियां पहुंचाता है ताकि सही रणनीतियां बनाई जा सकें।
बाइबलीय उदाहरण - 3 इसके पहले कि यीशु अपने चेलों को लोगों के मध्य भेजे, उसने उनके मध्य चल-फिरकर उनकी आवश्यकताओं को देखा (मत्ती 9:35-10:1)। जब उसने जबरदस्त आवश्यकताओं को स्वयं देखा, उसे खोए हुओं पर गहरा तरस आया। उसके अवलोकन ने उसे प्रार्थना सहयोगियों को तैयार करने और तब अपने चेलों को भेजने के लिए प्रेरित किया।	**तात्पर्य** प्रत्यक्ष सर्वेक्षण तरस उत्पन्न करता, प्रार्थना को गतिमान करता है और सेवकाई को सुसमाचार प्रचार, कलीसिया-रोपण और शिष्य बनाने के लिये केन्द्रित करता है।
बाइबलीय उदाहरण - 4 जब प्रभु ने आरंभिक कलीसिया में लोगों की संख्या को बढ़ाया तब कलीसिया ने उनकी संख्या का हिसाब रखा और उसकी जानकारी दी (प्रेरित 2:41,47; 4:4; 5:14; 9:31)।	**तात्पर्य** इस प्रकार की जानकारी हमें यह समझने में सहायता करती है कि परमेश्वर किसी क्षेत्र-विशेष के लोगों के जीवनों में कहां और कैसे कार्य कर रहा है।

अच्छे सर्वेक्षण की आवश्यकता:

जब मूसा के द्वारा कनान देश का भेद लेने के लिए भेजे गए भेदिये लौट आए और अपना प्रतिवेदन दिए तब बारह में से दस ने गलत जानकारियां दीं जिससे इस्राएलियों ने मूसा और परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया (गिनती 13:27- 14:38)।

1. कभी-कभी कलीसिया, पुराने तरीकों से जुटाए गए तथा त्रुटिपूर्ण आंकड़ों पर आधारित असत्य अनुमानों के अनुसार कार्य करती है। समय बदल जाता है; कल के सत्य सरलता से आज की काल्पनिक कहानियों बन जाते हैं। जब ऐसा होता है तब अंधकार के राज्य को लाभ पहुंचता है।
2. सही जानकारी के बगैर कलीसिया की वृद्धि रुकने लगेगी। ज्योति के राज्य के द्वारा युद्ध जीतने के लिए (कुलु. 1:13-14) हमें तथ्यों पर प्रकाश डालना होगा। अंधकार को दूर करने के लिए सच्चाई- अर्थात् तथ्य, वास्तविकता और प्रकाश - आवश्यक हैं। यीशु ने कहा है: "सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा।"
3. सेवकाई में सफलता के लिए सही जानकारी सही रूप में, सही हाथों में, सही समय में उपलब्ध होना आवश्यक होता है। ऐसा क्यों होता है कि किसी एक क्षेत्र में कुछ कलीसियाएं बढ़ती जाती हैं जबकि अन्य क्षेत्रों में विकास गतिहीन हो जाता है या गिरावट हो जाती है? बहुधा सावधानीपूर्वक की गई खोजबीन से पता चलता है कि सामाजिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रति जागरूकता में कमी रही है।
4. सर्वेक्षण यह निर्णय करने में हमारी सहायता करता है कि सेवकाई में क्या करने की आवश्यकता है और (विशेषकर सुसमाचार प्रचार के विषय में) कौनसी बाते काम कर रही है या नहीं कर रही है। सर्वेक्षण हमारी सहायता कर सकता है हम यह देखें कि परमेश्वर लोगों के जीवनों में पहले ही क्या कर रहा है, ताकि हम उसके साथ कार्य करने में सलग्न हों।

सर्वेक्षण के दो बुनियादी तरीके : बुनियादी रूप से सर्वेक्षण के दो प्रकार हैं जिनकी हमें कलीसिया-रोपण के कार्य में आवश्यकता होगी। प्रथम को ''फसल की कटनी का खेत" और दूसरे को ''फसल कटाई का श्रमबल" कहते हैं।

1. फसल की कटनी का खेत वर्तमान संदर्भ है जिसमें कलीसिया सेवकाई करती है। "कटनी का खेत" वाक्यांश यूहन्ना 4:35 से लिया

गया है जहां यीशु ने अपने चेलों को उन खेतों को देखने का आदेश दिया जो कटनी के लिए तैयार थे।

2. फसल कटाई के श्रमबल में ये सब आते हैं: विश्वासी, कलीसियाएं, डिनामिनेशन, कलीसियाके सहयोगी समूह जैसे कि प्रशिक्षण देनेवाले संस्थान, मिशन एजेंसियां और आपके क्षेत्र में जो मसीही मीडिया होते हैं।

पाठ 3
फसल की कटनी के खेत में सर्वेक्षण करना

यूहन्ना 4:35 में यीशु ने अपने शिष्यों से उन "खेतों पर दृष्टि डालने" की आज्ञा दी जो कटनी के लिए तैयार थे। "दृष्टि डालो" और "खेतों" दोनों शब्द अर्थपूर्ण हैं।

1. "दृष्टि डालो" का अर्थ किसी वस्तु का अर्थ निकालने के लिए उसका अध्ययन करना, और जांच करना या परखना होता है। यह सर्वेक्षण की बात करता है।
2. "खेत" शब्द लोगों को दिखाता है। यीशु ने चेलों को पास बुलाकर उन लोगों को देखने कहा जो संभवत: उस सामरी स्त्री से यीशु और उसके सुसमाचार के बारे सुनकर उसकी ओर आ रहे थे (यूह. 4:27-38)। यीशु आत्माओं की कटनी की बात कर रहा था (लूका 10 और मत्ती 9 भी देखिए)।

किसी लक्षित क्षेत्र तक पहुंचने का विचार करते समय कलीसिया-रोपकों को उस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक विशिष्टताओं को जानना चाहिए।

1. उदाहरण के लिए, हम जिस बदलते हुये समयों में रहते हैं वे प्राय: कलीसियाओं और युवा पीढ़ियों के मध्य मतभेद उत्पन्न करते हैं। सुसमाचार प्रचार, प्रशिक्षण और कलीसिया रोपण के लिए बहुधा नये तरीकों की आवश्यकता होती है।
2. "हमेशा की तरह सेवकाई" की जाये तो वह "हमेशा की तरह परिणाम" देगी। हमें कलीसिया के बाहर के उन लोगों के वैश्विक दृष्टिकोण और मनस्थिति को समझना होगा जिन्हें सुसमाचार पहुंचाने के लिए परमेश्वर हमें बुला रहा है।

सर्वेक्षण के निम्नलिखित प्रश्न फसल की कटनी के लक्षित खेतों की बेहतर समझ प्रदान करते हैं :

1. लक्षित क्षेत्र की कुल जनसंख्या कितनी है?
2. लक्षित क्षेत्र की सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताएं क्या हैं?
3. कुल जनसंख्या में पुरूषों, स्त्रियों और युवाओं का प्रतिशत कितना है?
4. कामकाजी वयस्कों की संख्या कितनी है?
5. प्रमुख व्यवसाय क्या-क्या हैं? लोगों की आमदनी किस तरह की है?
6. लक्षित क्षेत्र का जातीय और सांस्कृतिक ताना-बाना क्या है?
7. लक्षित क्षेत्र में कौन से जातीय अल्पसंख्यक लोग पाए जाते हैं? क्या वे किसी क्षेत्र विशेष में निवास करते हैं?
8. वे क्या भाषाएं बोलते हैं?
9. राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास का वर्णन करना। आमतौर पर, लक्षित क्षेत्र में कौनसी अ-बाइबलीय धारणाएं पायी जाती हैं?
10. सामाजिक पीड़ा और कष्ट के प्रमुख विषय क्या हैं?
11. कौन सी भौतिक बातें (नदियां, रेलमार्ग या सड़क इत्यादि) उस क्षेत्र को जोड़ती हैं या विभाजित करती हैं? ये विभाजक बातें किस प्रकार से यात्रा के तरीकों, शक्षा के अवसरों और अर्थव्यवस्था इत्यादि को प्रभावित करती हैं?
12. यदि लक्षित क्षेत्र शहर या कस्बा है तो क्या वहां निर्दिष्ट आवासीय और औद्योगिक इलाके हैं? लोग बाजार कहां जाते हैं?
13. क्या लोग कार्यस्थल के आस-पास निवास करते हैं या उन्हें कार्यस्थल जाने लम्बी यात्रा करनी पड़ती है? आवागमन के साधन क्या हैं? क्या अधिकांश लोग साईकल, कार, बस, या लोकल रेलगाड़ी से यात्रा करते हैं?
14. लोग खाली समय बिताने और मनोरंजन के लिए कहां जाते हैं? क्या वे शहर में रहते हैं और उद्यानों में जाते हैं?
15. क्या वे अधिकांश सप्ताहांत शहर में ही रहते हैं या बाहर जाते हैं?

फसल की कटनी के खेतों की अधिकांश जानकारियां कहां प्राप्त हो सकती है?

1. फसल की कटनी हेतु खेतों की जानकारी यक्तिगत बातचीत और सर्वेक्षणों से प्राप्त की जा सकती है।

2. फसल की कटनी हेतु खेतों की कुछ बुनियादी जानकारियां सामाजिक केन्द्रों, ग्रंथालयों, शासकीय कार्यालयों और इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं। तौभी, जब इन श्रोतों का उपयोग हो जाता है तो उनमें के खाली स्थानों को भरने और उन्हें सामयिक बनाने तथा उनकी पुष्टि करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार आवश्यक होंगे।
3. स्थानिय लोगों से व्यक्तिगत साक्षात्कार (बातचीत) करना आम तौर पर बेहतर तरीका होता है कि उनकी शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को निश्चित रीति से जाना जाये। स्थानीय शासकीय अधिकारियों से साक्षात्कार करना महत्वपूर्ण हो सकता है ताकि जान सकें कि वे उन आवश्यकताओं को किस तरह देखते हैं - और हमेशा लोगों से पूछिए कि आप उनकी किन आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना कर सकते हैं!

पाठ 4
फसल की कटनी के खेत को समझना

आपके खेत के आत्मिक वातावरण को समझना :

1. आपके लक्षित क्षेत्र पर किन प्रमुख धर्मों का प्रभाव है? क्या उस क्षेत्र में उनका प्रभाव घट रहा है या बढ़ रहा है?
2. जनसंख्या का कितना प्रतिशत उस प्रमुख धर्म या धर्मों का अनुयायी है? क्या उनकी संख्या घट रही है या बढ़ रही है? और क्यों?
3. आपके क्षेत्र में और कौन कौन से धर्म या धर्म-संप्रदाय (पंथ) पाए जाते हैं और क्या वे शिष्य बनाने में सफल हो रहे हैं?

लोगों के वैश्विक दृष्टिकोण को समझना :

1. लोगों के वैश्विक दृष्टिकोण और उनकी महसूस की जाने वाली आवश्यकताओं को जान कर हमें उन तरीकों को पहचान पाने में सहायता होगी जिनके द्वारा हम उन्हें यीशु मसीह का प्रेम अर्थपूर्ण रीति से बता सकेंगे।
2. लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का सर्वोत्तम तरीका यह होता है कि उनसे प्रश्न पूछें और उनके व्यवहार पर ध्यान दें।
3. अपने लक्षित क्षेत्र में जाइए - बाजारों में या ऐसे स्थानों में जाइये जहां लोगों तक पहुंचा जा सकता है- और कम से कम 15-20 लोगों से बातें कीजिए।

अपने लक्षित क्षेत्र में लोगों से निम्न विषयों पर प्रश्न पूछिए :

1. उनके आत्मिक विश्वास : क्या वे ईश्वर पर विश्वास करते हैं? यदि हां तो वे ईश्वर के बारे क्या विश्वास करते हैं? वे यीशु, बाइबल, स्वर्ग या नरक के बारे क्या जानते हैं? क्या वे स्वर्गदूत, दुष्टात्माओं और शैतान के अस्तित्व पर विश्वास करते हैं? वे पाप के बारे क्या विश्वास करते हैं?
2. जब वे बीमार होते हैं तब सहायता के लिए कहां जाते हैं?
3. किसी की मृत्यु होने पर उनका क्या विश्वास है और क्या करने की परंपराएं हैं?
4. क्या वे भाग्य या नसीब पर विश्वास करते हैं?,
5. वे कितनी बार चर्च जाते हैं, यदि वे जाते हैं तो? यदि नहीं, तो वे क्यों चर्च नहीं जाते हैं?
6. उस क्षेत्र के प्रमुख त्योहार और अवकाश क्या हैं? वे उन्हें कैसे मनाते हैं?
7. उन्हें उनके जीवन के लिए सबसे अधिक अच्छा क्या लगता है? वे किस एक बात को परिवर्तित करना चाहेंगे?
8. वे अपने समाज में कौन सी एक या दो सामाजिक समस्याओं को देखते हैं (शराब, नशीली दवाइयां, पर्याप्त चिकित्सा सुविधा की कमी, बिना देखरेख के वृद्ध, शिक्षा के अपर्याप्त अवसर, अनाथ बच्चे, इत्यादि)?
9. उनके तीन पसंदीदा मुहावरे या कहावतें कौन सी हैं? (उनकी कहावतों के द्वारा जीवन के प्रति उनके विचारों और आदर्शों की महत्वपूर्ण बातों को जाना जा सकता है।)
10. उनके समाज के सर्वमान्य अगुवे कौन हैं? उन्हें क्यों अगुवों के रूप में देखा जाता है?
11. लोग किसे अपना हीरो या नायक मानते हैं?
12. उन पांच बातों की सूची बनाइये जिन्हें लोग दूसरों के जीवन में महत्व देते हैं (ईमानदारी, मेहनत, चालाकी, उदारता, इत्यादि)।

अपने क्षेत्र में परमेश्वर की उपस्थिति और गवाही के सामर्थ्य को समझना :

1. यदि उस क्षेत्र में पहले से कुछ विश्वासी हैं, या कम से कम ऐसे लोग हैं जो स्वयं को मसीही मानते हैं, तो आपको अध्ययन करना चाहिए कि वहां मसीहीयत का आना कैसे हुआ। यह सर्वेक्षण प्रकाश डाल सकता है कि हम जानें कि वहां के लोग मसीहीयत को कैसे ग्रहण करते हैं या वे क्यों उसका विरोध करते हैं?
   - उस क्षेत्र में मसीहीयत का आना कब और कैसे हुआ? क्या मसीहीयत को उन लोगों पर लादा गया था या उन्होंने सुसमाचार

को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया था?
- उस क्षेत्र में पाए जानेवाले प्रत्येक डिनामिनेशन के आगमन के इतिहास का सर्वेक्षण कीजिए।
- यह इतिहास आपके कलीसिया रोपण के प्रयास को कैसे प्रभावित करता है?

2. उस “क्षेत्र” में पाए जाने वाले वर्तमान विश्वासियों के संबंध में मिलने वाली जानकारी आपकी सहायता करेगी कि आप अपने लक्षित क्षेत्र के फसल की कटाई के लिये आवश्यक श्रमबल को समझना आरंभ करें। अगले पाठ में हम इस फसल की कटाई के श्रमबल के बारे अधिक सीखेंगे।

पाठ 5
फसल कटाई श्रमबल का सर्वेक्षण

श्रमबल क्या है?

1. फसल कटाई श्रमबल में आपके लक्षित क्षेत्र में के या उसके आस-पास के विश्वासी, कलीसियाएं, डिनामिनेशन्स, और कलीसिया के सहायक समूह, जैसे कि प्रशिक्षण प्रदान करनेवाली सेवकाइयां, मिशन संस्थान और मसीही मीडिया, आते हैं।
2. आपके लक्षित क्षेत्र में के फसल कटाई श्रमबल को समझने के लिए आपको कलीसियाओं की संख्या, उनकी पहचान, उनकी संगठनात्मक साझेदारियां इन सब को और उन कलीसियाओं के क्षेत्रफल और उनमें पाए जाने वाले जाति समूह को समझना होगा।
3. कौनसी कलीसियाएं विकास कर रही हैं, कौनसी नहीं कर रही है, और उनके कारण क्या है इसका नक्शा बनाना महत्वपूर्ण होता है।
4. आपको जानने की आवश्यकता होगी कि कौनसा सामाजिक समूह कलीसिया में है और कौनसा नहीं है और क्यों?
5. अंत में, यह खोज करना महत्वपूर्ण होगा कि कौन सुसमाचार प्रचार, शिष्यता प्रशिक्षण, सामाजिक सेवा कार्य और कलीसिया रोपण को सफल तरीकों से कर रहा है?

कटाई श्रमबल ने क्या किया है, क्या कर रहा हैं, और अभी क्या करना बाकी है इसकी **सही और ताजी तस्वीर प्राप्त करने और बनाए रखने के लिये** सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण और विश्लेषण की आवश्यकता होती है। आपके लक्षित क्षेत्र में कटाई श्रमबल को समझने के लिए निम्नलिखित बातें सहायक होंगी :

1. एक नक्शे में दिखाना कि उस क्षेत्र में कहां कलीसियाएं हैं और कहां नहीं हैं।
2. प्रत्येक कलीसिया का अनुमानित माप/आकार और उसकी स्थापना कब हुई थी दिखाना।
3. प्रत्येक कलीसिया के द्वारा यदि किसी विशेष जन समूह या जाति समूह को सुसमाचार पहुंचाया जा रहा है (उदा. के लिए, कुछ विशेष जाति समूह, खानाबदोश/जिप्सी, युवा, बालक-बालिकाएं, अन्तरर्राष्ट्रीय इत्यादि) तो उनकी पहचान करना। वे अपने प्रयासों में कितने सफल हो रहे हैं यह जानना।
4. कौनसी कलीसियाएं वृद्धि कर रहीं हैं और कौनसी नहीं इसकी पहचान करना।
5. उस लक्षित क्षेत्र में सक्रिय समस्त मिशनों और कलीसिया-सहायक समूहों की सूची बनाना। प्रत्येक की सेवा का संक्षिप्त वर्णन करना (साहित्य, जेल, अल्पसंख्यक सेवा, युवा, इत्यादि)।
6. समाज के विभिन्न घटकों पर वर्तमान में कलीसिया का कितना प्रभाव हो रहा है इसका निर्धारण करना।
7. विभिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक समूहों को सुसमाचार पहुंचाने में जो काम बाकी है उसका वर्णन करना।

सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारियों का उपयोग करना

1. जानकारियां एकत्रित कर लेने के पश्चात्, परमेश्वर के लोगों को कार्य के लिए चुनौती देने और प्रोत्साहित करने के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है।
2. सर्वेक्षण ईश्वर-भक्त स्त्रियों और पुरूषों को प्रेरित कर सकता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की योजना पूर्ण करने में अपने वरदानों और क्षमताओं को बुद्धिमानी से समर्पित करने हेतु, और दूसरे लोग जीवन पा सकें इसलिए जो कुछ आवश्यक है उसे करने हेतु, अपने आप को समर्पित करें।
3. किसी क्षेत्र के अगुवों के साथ सर्वेक्षण के परिणामों को साझा करना आँखे खोलनेवाला हो सकता है। इससे उन्हें यह देखने में सहायता होती है कि व्यापक चित्र में उनकी सेवाएं कहां और कैसे उपयोगी हो रही हैं। जब वे बचे हुए कार्य को देखते हैं, तो वे उसे पूर्ण करने के अनुमानों के प्रति स्वयं, और सामुहिक रूप से भी, सजग हो जाते हैं।
4. ये प्राप्त जानकारियां, प्रार्थना और परमेश्वर के द्वारा प्रगट किये गये उद्देश्य के साथ, कलीसिया को ''कार्य करने की बुलाहट'' देती है कि अपने क्षेत्र को नए समूहों और कलीसियाओं से भर दे।

राज्य या क्षेत्र में कलीसिया रोपण रणनीति के लिए सर्वेक्षण क्या स्थान रखता है?

1. सर्वेक्षण, तथ्य खोजने की प्रक्रिया है कि विस्तृत लक्षित क्षेत्र में कार्य पर निगरानी रखें और उसका नाप-जोख करे ताकि महान आदेश को पूरा करने के लिए लक्ष्यों, योजनाओं और प्राथमिकताओं को स्थापित किया जाये।
2. सर्वेक्षण, फसल की कटनी के खेत तथा कटाई के श्रमबल का सावधानीपूर्वक, धैयपूर्वक, सुव्यवस्थित और बुद्धिमत्तापूर्ण रीति से किया गया अध्ययन है ताकि लक्षित क्षेत्र और वहां के निवासियों के बारे में सटीक और ताजा जानकारी प्रदान की जाये।

पाठ 6
जैसे कि, यीशु की आँखों से देखना

मत्ती 9:35-38 में दिए गए यीशु की सेवा के सारांश को पढ़िए और उस पर विचार कीजिये।

1. यीशु बड़े नगरों के साथ-साथ छोटे और अप्रसिद्ध गांवों में भी जाता रहा - *"यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा ....।"*
2. उसने वचन और कार्य के द्वारा सेवकाई की - *"और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।"*
3. उसने भीड़ पर ध्यान दिया और उनकी गहरी आत्मिक आवश्यकताओं को समझा - *"जब उसने भीड़ को देखा तो उसकों लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए थे।"*
4. उसने कटनी के विस्तृत खेतों को देखा और कटनी के श्रमबल की अपर्याप्तता पर गौर किया - *"पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।"*
5. उसने अपने सच्चे चेलों को मध्यस्थता की प्रार्थना करने कहा - *"इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।"*

हम इस वर्णन को अपने शब्दों में इस तरह कह सकते हैं :

1. "यीशु इस आदत में था कि उन सब स्थानों में जाये जहां लोग मिल सकते हैं।"
2. "वह जहां कहीं भी गया, जो कुछ उसे दिखाई दिया उसे उसने अपने दिल से महसूस किया: बड़ी संख्या में लोग निराशा और दिशाहीनता में जीवन यापन कर रहे हैं!"
3. "अत: उसने अपनी शिक्षा के द्वारा उन्हें दिशा प्रदान की; उसने अपने उपदेश के द्वारा उन्हें आशा प्रदान की; उसने उनके सब रोगों को चंगा करने के द्वारा उन पर अपनी दया प्रगट की।"
4. "फसल के खेतों और कटाई के श्रमबल के मध्य के अत्यधिक असंतुलन के कारण उसने अपने सर्वाधिक विश्वस्त चेलों को आग्रह किया कि वे स्वामी से बिनती करें कि वह और अधिक श्रमबल भेजे।"

यीशु ने सब नगरों और गांवों में जाने का कष्ट क्यों उठाया?

1. उसने लोगों की आवश्यकताओं को कैसे खोज निकाला?
2. किस बात ने उसमें तरस उत्पन्न किया?
3. किस बात ने उसे प्रचार करने, शिक्षा देने और चंगा करने की अगुवाई और प्रेरणा दी?

उत्तर : उसने जनसमूह को वैसे ही देखा जैसे वे थे।

1. यह मात्र साधारण दृष्टि से देखना नहीं था, वह दृढ़ता से किया गया अवलोकन भी नहीं था।
2. जनसमूह पर डाली गई मात्र साधारण दृष्टि ने उनकी दशा को अनदेखा किया होता। सूक्ष्म अवलोकन ने मात्र उसकी उत्सुकता को संतुष्ट किया होता।
3. यह अंर्तदृष्टिपूर्ण रीति से समझना था - सुव्यवस्थित, सावधानीपूर्वक, सर्वसमावेशी दर्शन था - जिसमें ईश्वरीय बुद्धि, समझ और परख मिली हुई थी।

यीशु अपनी सेवकाई के उदाहरण के द्वारा हमें दिखाता है कि फसल की कटनी के खेतों और कटाई के श्रमबल का सटीक और ताजा चित्र रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. उसकी सेवकाई हमें सिखाती है कि सर्वेक्षण, तरस, प्रार्थना और अन्य सब सेवकाइयां प्रभावशाली रणनीति के अविभाज्य अंग हैं।
2. वैसे ही जैसे यीशु ने लोगों को और उनकी आवश्यकताओं को देखा, हमें भी आपने आस-पास के सब लोगों को सावधानीपूर्वक

और प्रेम से देखना चाहिए ताकि :

- लक्षित क्षेत्र के लोगों के बारे उपयुक्त जानकारियों और तथ्यों को खोज सकें।
- इस नयी जानकारी के आधार पर लोगों के संबंध में अचूक और ताजा समझ को विकसित कर सकें।
- हमारी जानकारी, ज्ञान और समझ को लागू करने के नये और व्यवहारिक तरीकों को खोज सकें।

पाठ 7
सर्वेक्षण के लिए बाइबलीय पद्धति

परिचय : हमने पाठ 2 में देखा है कि परमेश्वर ने मूसा को कनान देश का भेद लेने के लिए 12 भेदिए भेजने कहा था, और उसी प्रकार हमें भी लक्षित समूह को सुसमाचार सुनाने का प्रयास करने के पहले उनके बारे सही जानकारी एकत्रित कर लेनी चाहिए।
गिनती 13:1-14:38 में हम उन भेदियों के बारे में पढ़ते हैं जिन्हें उस देश का और लोगों का भेद लेने के लिए भेजा गया था जिसे वे जीतने वाले थे। यह रिपोर्ट किसी भी मिशन या कलीसिया रोपण करने वाले प्रोजेक्ट के लिए फसल के खेतों के सर्वेक्षण को चित्रित करती है।

आवश्यक जानकरी और प्रश्नावली का प्रारूप : उन्हें एकत्रित की जानेवाली जानकारियों की एक विस्तृत सूची के साथ भेजा गया था।। उनकी सर्वेक्षण-प्रश्नावली कुछ इस प्रकार की दिख सकती थी।

1. भूमि किस प्रकार की है? --- अच्छी --- खराब
2. लोग किस प्रकार के हैं? --- बलिष्ठ --- कमजोर; --- संख्या में बहूत --- संख्या में कम
3. उनके नगर किस प्रकार के हैं? --- गढ़वाले नगर --- खुले हुए नगर
4. भूमि किस प्रकार की है? --- उर्वर --- बंजर --- पेड़-पौधे युक्त - - - पेड़-पौधे रहित
5. वहां किस प्रकार के फल लगते हैं? ---

पुराना नियम से सवेक्षण की शिक्षा : पुराना नियम में इस बात का लेखा-जोखा दर्ज है कि परमेश्वर के सेवकों ने, उन्हें परमेश्वर के द्वारा सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए, प्राप्त ज्ञान (जानकारी) का किस प्रकार उपयोग किया।

1. गिनती 1:1-46 - मूसा को आदेश दिया गया था कि युद्ध के लिये इस्राएलियों के सैन्यबल और श्रोत की गिनती करे (गिनती 26:2; यहोशू 7:13-15; न्यायियों 7:2-6 भी देखिए)।
2. यहोशू 2:1-11 - यहोशू ने लोगों की दशा और प्रतिक्रिया को जानने के लिए दो लोगों को भेजा।
3. यहोशू 13:1-7 - परमेश्वर ने यहोशू को भूमि को जीतने के लिए क्या किया जा चुका था और क्या करना बाकी था इसका मूल्यांकन दिया।
4. नहेम्याह 1:3-4; 2:1-6 - जानकारी प्राप्त होने पर नहेम्याह परमेश्वर के लोगों के लिए प्रार्थना करने और जो सही था उसे करने के लिए प्रेरित हुआ था।
5. नहेम्याह 2:7-18 - नहेम्याह ने, शहरपनाह के पुनर्निमाण के लिए क्या किया जाना चाहिये यह देखने के लिये पहले सावधनीपूर्वक उसका अध्ययन किया ; उसने लोगों को इस व्यवस्थित कार्य में जुटाने के लिए इस जानकारी का उपयोग किया।
6. 1 इतिहास 12:32 - दाऊद की सेना में रणनीतिकार सम्मिलित थे जो समय को पहचानते थे और इस्राएल को सिखा सकते थे कि उन्हें क्या करना चाहिए।
7. जब आप पुराना नियम के वृत्तांतों को पढ़ते हैं तब इन प्रश्नों पर विचार कीजिए :
   - जिन लोगों ने सर्वेक्षण किया क्या उन्होंने स्वयं से ही यह किया या उन्हें सर्वेक्षण करने कहा गया था?
   - उन्होंने क्या जानकारियां एकत्रित कीं?
   - किसने जानकारियां एकत्रित की और किस प्रकार से एकत्रित की?
   - उन्हें जानकारियां क्यों चाहिए थी?
   - पूरे देश को शिष्य बनाने के कार्य में इस प्रकार का सर्वेक्षण या जानकारियां किस प्रकार कलीसिया की सहायता कर सकती हैं?

नया नियम से शिक्षाएं : नए नियम की कलीसिया को सर्वेक्षण करने का आदेश नहीं दिया गया था। तौभी ऐसी परिस्थितियां मिलती हैं जिनमें सर्वेक्षण का उपयोग किया गया था जिससे हम कुछ सीख सकते हैं।

1. मत्ती 9:35-38 - यीशु ने फसल के खेतों की दशा को और कटाई के श्रमबल को पहचाना (लूका 10:1-11 भी देखिए)।
2. यूहन्ना 4:27-42 - यीशु ने पहचान लिया कि फसल कटनी के लिए कब तैयार थी।
3. लूका 15:1-10 - खोए हुए को ढूँढने के लिए परिश्रमी और सुव्यवस्थित सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है (लूका 14:1-24 भी देखिए)।
4. 1 कुरिंथि 9:19-23 - सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझने के द्वारा पौलुस सब के लिए सब कुछ बन गया।
5. नया नियम की कलीसिया ने महत्वपूर्ण घटनाओं का स्पष्ट विवरण रखा (लूका 1:1-4; प्रेरित 1:1 भी देखिए)।
6. उन्होंने इस बात का भी हिसाब रखा कि कितने लोग उद्धार पा रहे थे (प्रेरित 2:41, 47; 4:4; 5:14; 6:1,7; 9:31,42 और 13:48,49 भी देखिए)।

पाठ 8
सर्वेक्षण करने के लिए तैयार होना

सर्वेक्षण एक सतत् की प्रक्रिया है कि महान आदेश को पूरा करने के लिए खुले हुए दरवाजों को और परमेश्वर के उपाय, अगुवाई और समाधान को खोजते रहें।

1. महान आदेश को पूर्ण करने के लिए सर्वेक्षण करना एक जीवन शैली है। इसमें लोगों के जीवन का यह अनुशासन सम्मिलित होता है कि वे दैनिक आवश्यकताओं की परमेश्वर के प्रबंधों के साथ की तुलना करते रहें।
2. इसमें मानवीय परिस्थितियों को आत्मिक पहचान के साथ समझने की आवश्यकता होती है। यह हमें नई जानकारियों के प्रकाश में अपनी सेवकाई को नया रूप देने और प्रासंगिक बनाने के लिए उत्साहित करता है।

सर्वेक्षण, तकनीकी विज्ञान और आत्मिक अनुशासन दोनों है।

1. तकनीकी रूप से यह निम्न साधनों का उपयोग करता है :
   - गणित और सांख्यिकी या आंकड़े
   - सामाजिक विज्ञान और जनसांख्यिकी, और
   - मानव-जाति विज्ञान और भाषा-मूलक
2. आत्मिक रीति से यह निम्नलिखित दिशा निर्देशों और साधनों के प्रकाश में कटाई श्रमबल और फसल के खेतों की प्रार्थना के साथ जांच करता है :
   - महान आदेश
   - मनुष्य की भावनात्मक, शारीरिक, नैतिक और आत्मिक आवश्यकताओं पर बाइबलीय दृष्टिकोण, और
   - परख और मध्यस्थता के आत्मिक वरदान

जानकारी की शक्ति

जब तब सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण किया जा चुका होगा - अर्थात्, साक्षात्कार करने, रिकॉर्ड करने, गणना करने और लिखने का कार्य पूर्ण किया जा चुका होगा- तब तक कम से कम कुछ लोग तो **"सत्य की पहचान"** में और उसकी कलीसिया की महत्वपूर्ण सदस्यता में लाए जा चुके होंगे। सामान्यत: सर्वेक्षण सुसमाचार प्रचार की प्रक्रिया नहीं है जो लोगों को यीशु पर सीधे विश्वास करने में ले आती हो। तौभी सर्वेक्षण और जानकारी प्राप्त करना यह महान आदेश को पूरा करने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण होता हैं। संसार में फैले हुये फसल के विशाल खेतों का सच्चा दृश्य एक ऐसा साधन है जिसे परमेश्वर अपने लोगों को खोए हुओं का बोझ देने के लिए उपयोग में लाता है। जब पर्याप्त, सटीक और ताजा जानकारी का सही तरीके से अर्थ निकाला जाता है तब वह कलीसिया को प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार करने और कलीसिया रोपण करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

फसल के खेतों और कटाई के श्रमबल की समझ कुछ प्रश्नों के उत्तर मांगती है:
(1) वे संख्या में कितने हैं? (2) वे कहां हैं? (3) वे कौन हैं? (4) वे कैसे हैं?

सर्वेक्षण के लिये कुछ प्रश्नों के नमूने जो यह जानने में मदद करते हैं कि हम मत्ती 24:18-24 के कार्य को पूर्ण करने के कितने पास हैं:

1. लक्षित क्षेत्र के कितने गांवों (या किसी शहर के मामले में उसके कितने इलाकों में) कोई कलीसिया नहीं है?
2. उन गांवों या इलाकों में कितने लोग निवास करते हैं?

3. क्या हमें और अधिक कलीसियाओं की रोपण करने की आवश्यकता है?
4. क्या यहां कलीसिया रोपण करने की कोई बेहतर विधि है?
5. कार्य पूरा करने के लिए हमें क्या करना होगा?
6. जहां सुसमाचार सुनाया गया या शिष्य बनाया गया वह राज्य, जिला या नगर कैसा दिखेगा?
7. हम एक पूरे राज्य, जिला या नगर में शिष्यता के विकास को किस माप से नापेंगे?
8. किस समाज या समूह के लोगों ने अब तक सुसमाचार नहीं सुना है?
9. इनमें से प्रत्येक समूह में सुसमाचार प्रचार और शिष्यता के लिए कौन सा तरीका सर्वोत्तम है?
10. हमारे लक्षित क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति के लिए पैदल पहुंच सकने की दूरी पर एक कलीसिया हो इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए वहां कितनी कलीसियाओं की आवश्यकता होगी?
11. कहां और किन लोगों के मध्य नयी कलीसियाओं की आवश्यकता है?
12. प्रत्येक समाज में नयाी कलीसिया आरंभ करने के बेहतर तरीके क्या-क्या हैं?

पाठ 9
जानकारी एकत्र करने के लिए सामान्य मार्गदर्शन

इसके पूर्व कि आप जानकारियां एकत्रित करना आरंभ करें:

1. यह निश्चित कर लीजिए कि आपको उस क्षेत्र की कलीसियाओं के सही अगुवों का सहयोग प्राप्त है।
2. यह निश्चित कर लीजिए कि आपने अपने कार्य के बारे सही लोगों को पूर्व सूचना दे दी है।
3. आपने सर्वेक्षण की योजना को पूरा तैयार कर लीजिए।
4. यह जान लीजिए कि आपको कौन सी जानकारी चाहिए और क्यों चाहिए?

फसल के खेतों और कटनी के श्रमबल के बारे में **अपना सर्वेक्षण उन जानकारियों को एकत्र करने के साथ आरंभ कीजिए जो पहले से ज्ञात हैं**। व्यापक क्षेत्र में जाकर सर्वेक्षण करने के पहले, जो ग्रंथालय से आवश्यक हो वह सर्वेक्षण कर लीजिए।

1. कुछ मामलों में, आप पाएंगे कि ग्रंथालय से या दूसरे दरजे से प्राप्त सर्वेक्षण मात्र अनुमान या अप्रासंगिक है और सटीक नहीं है। तथापि, यह जानकारी आपको आरंभ करने के लिये एक महत्वपूर्ण बिन्दु देगी जब आप पासबानों और कलीसिया के अगुवों का साक्षात्कार करेंगे।
2. जब आप साक्षात्कार करने जा रहे हैं तब आपके पास कुछ भी जानकारी न होने इसके बजाय कुछ तो जानकारियां होना बेहतर होगा।
3. तथापि, सावधान रहिए कि इस जानकारी के आधार पर आप उस विशिष्ट डिनामिनेशन या कलीसिया के बारे में, जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं, अपरिपक्व निष्कर्ष नहीं निकालेंगे।

ग्रंथालय में सर्वेक्षण करने के लिए जानकारियां कहां प्राप्त करें पर कुछ सहायक बातें:

1. राष्ट्रीय और स्थानीय ग्रंथालय
2. शासकीय जनगणना ब्यूरो, सांख्यिकी विभाग, नगरीय निकाय, और नगर योजना विभाग
3. सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालयों के ग्रंथालय
4. स्वास्थ्य, शिक्षा, और सामाजिक सेवा एजेंसियां और संगठन

जब आप जानकारियां एकत्रित रहे हैं तब:

1. जिन संभावनाओं का आपने पहले से अनुमान नहीं लगाया था उन्हें भी अपनी योजना में सम्मिलित करने के लिए अपनी सर्वेक्षण योजना को पुन: व्यवस्थित कीजिए।
2. यदि आप यह पाते हैं कि आपके प्रश्न समझ में नहीं आ रहे है, या आपने कोई महत्वपूर्ण बात को छोड़ दिया है, तो अपनी प्रश्नावली को पुन: ठीक रूप दीजिए।
3. अपने लक्ष्य को न भूलें। अध्ययन के उन क्षेत्रों में भटक न जायें जो आपके सर्वेक्षण के लक्ष्य से मेल नहीं खाते।
4. आगे बढ़ते हुए समस्त जानकारियों को व्यवस्थित करते चलिए। यह सवेक्षण की कमजोरियों और आपकी योजना के उन पहलुओं को पहचानने में सहायता करेगा जिनमें सुधार करने की आवश्यकता है। यह आपको कोई एक विचार बनाने का आरंभ करने में सहायता करेगा कि कोई कलीसिया क्यों वृद्धि कर रही है या क्यों नहीं कर रही है।

सर्वेक्षण दल में लोगों की भरती करना:

1. स्थानीय कलीसिया का सर्वेक्षण कार्य तब और अधिक बेहतर प्रभाव करता है जब उसी समाज के पासबान, कलीसिया के अगुवे और ले-मेन सर्वेक्षण करते हैं। प्रतिवेदनों का मिलना उन लोगों के "मौखिक बातों" से ही आरंभ हो जाता है जो सर्वेक्षण में भाग लिये हुये होते है।
2. उन देशों या क्षेत्रों में जहां अनेक बोलियां बोली जाती हैं, ऐसे लोगों की भरती करना आवश्यक हो जाता है जो प्रत्येक स्थानीय बोली को बोलना जानते हों। अनेक परिस्थितियों में ऐसे सर्वेक्षण करनेवाले खोज लेना संभव होता है जो अनेक बोलियां बोल सकते हैं।
3. सर्वेक्षण करने वालों को उस क्षेत्र के भूगोल, मौसम और दशा के जानकार होना आवश्यक है।
4. क्षेत्रीय समितियों और अथवा पासबानों की संगतियों को सर्वेक्षण में सक्रियता से भाग लेने के लिए समर्पित होना चाहिए।
5. सर्वेक्षणकर्ता पूर्णकालिक या अल्पकालिक (बाइबल स्कूल के विद्यार्थी जो अवकाश में आए हों) हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए पूर्णकालिक सर्वेक्षणकर्ताओं की आवश्यकता हो सकती है।

पाठ 10
सर्वेक्षण में एंगल स्केल का उपयोग करना

परिचय : एंगल स्केल (सीढ़ी) एक साधन है जो हमारी सहायता करती है कि हम प्रत्येक व्यक्ति या एक पूरे समूह के आत्मिक समझ और ग्रहण करने की क्षमता को नाप सकें। जब हम किसी जनसमूह के आत्मिक स्थिति पर सर्वेक्षण आरंभ करते हैं तब एंगल स्केल यह पहचानने में हमारी सहायता कर सकती है कि लोग सुसमाचार की समझ और उसे ग्रहण करने की अपनी क्षमता में कहां पर हैं।

एंगल स्केल के पीछे दो केन्द्रीय विचार हैं। प्रथम यह कि ऐसे लोग जो सुसमाचार की कोई समझ नहीं रखते वे परमेश्वर में विश्वास की ओर धीरे-धीरे बढ़ने की प्रक्रिया के बिना कदाचित ही मसीह पर विश्वास लाते हैं। दूसरा विचार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की अपनी समझ और परमेश्वर के साथ के अपने सम्बंध में नीचे दी गई स्केल (सीढ़) पर कहीं न कहीं आता है।

इसलिए एक व्यक्ति (या गांव और जाति समूह) को नीचे दी गई सीढ़ी में निरंतर ऊपर चढ़ने में सहायता करना एक मसीही कार्यकर्ता का लक्ष्य होता है। जो आत्मिक अंधकार में हैं उनके लिए हमें उनकी समझ को पश्चाताप और नए जन्म के बिन्दु तक लाने का कार्य करना चाहिए; और जो मसीह में विश्वास ला चुके हैं उनके लिये हमें उनकी मसीह में वृद्धि को अगले पायदानों पर प्रोत्साहित करना चाहिए (फिलि. 3:8-14)।

अंक:	**एंगल स्केल**
+5	भण्डारीपन
+4	परमेश्वर से संगति
+3	वैचारिक और व्यवहारिक विकास
+2	मसीह की देह में सम्मिलित किया जाना
+1	निर्णय पश्चात् मूल्यांकन
----	**नया जन्म - पुनरूद्धार**
-1	पश्चाताप और मसीह में विश्वास
-2	कार्यवाही करने का निर्णय
-3	व्यक्तिगत समस्या की पहचान
-4	सुसमाचार के प्रति सकारात्मक मनोभाव
-5	सुसमाचार के तात्पर्य को समझना
-6	सुसमाचार की बुनियादी बातों के प्रति जागरूकता
-7	सुसमाचार के प्रति प्रारंभिक जागरूकता
-8	सर्वोच्च शक्ति के प्रति जागरूकता, सुसमाचार का कोई ज्ञान नहीं

(एंगेल स्केल के अनेक अलग-अगल रूप हैं। ऊपर जो दिया गया है वह कुछ विभिन्नताओं के साथ मूल एंगेल स्केल के समान है। आत्मिक ग्राह्यता की अवस्था को पहचानने के लिए दूसरा मॉडल ग्रे मैट्रिक्स है। यह आपको इंटरनेट पर मिल सकता है।)
आज बहुसंख्यक भारतीय लोग एंगेल स्केल में -8 अंक पर पाए जायेंगे। अनेक भारतीय गांवों और जाति समूहों के लिए भी यही बात कही जा सकती है। दूसरे शब्दों में, बहुसंख्य भारतीय एक सर्वोच्च शक्ति के प्रति जागरूक तो हैं किन्तु उन्हें सुसमाचार का कोई ज्ञान नहीं है। आत्मिक अंधकार में रह रहे लोगों के लिए हमारी यह महत्त्वाकांक्षा होनी चाहिये कि उन्हें इस स्केल पर आगे बढ़ाते जाये कि वे सुसमाचार के प्रति जागरूकता (-7) से आगे सुसमाचार की बुनियादी बातों के प्रति जागरूकता (-6) पर और उससे आगे उस बिन्दु तक ले जायें जहां वे सुसमाचार के तात्पर्य को समझ सकेंगे (-5)।

परन्तु यह तो मात्र आरंभ ही है। हमें उन्हें सुसमाचार के प्रति सकारात्मक मनोभाव (+4) में और वहां से उस बिन्दु पर लाना चाहिए जहां वे यह पहचान लेंगे कि वे व्यक्तिगत रीति से परमेश्वर के स्तर से दूर हैं (+3) और वे परमेश्वर को अपने हृदय में स्वीकार करने का या उसका इन्कार करने (+2) का निर्णय लेंगे। अंततः जब वे विश्वास का कदम उठाते हैं और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं (+1), तो वे नए आत्मिक जीवन में नया जन्म पाते हैं। इस बिन्दु से आगे हमारी जिम्मेवारी होती है कि उन्हें शिष्यता सिखाएं (वृद्धि करने में उनकी सहायता करें) कि वे अपने विश्वास में मसीह की समानता में बढ़ते जायेंगे।

पाठ 11
आत्मिक मानचित्रण

आत्मिक मानचित्रण (नक्शा) बनाने के बाइबलीय उदाहरण :

1. इसे हम भेदियों के कनान देश में जाने के उदाहरण में देखते हैं (गिनती 13:1-2,17-20)। वे वहां के लोगों के स्थान और उनकी ताकत इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारियां लेकर वापस आए (गिनती 13:29)।
2. पौलुस ने एथेंस में प्रवेश करने के पहले उस नगर को देखने-जानने का समय निकाला (प्रेरित 17:16, 22-23)।

आत्मिक मानचित्रण क्या है और इसका उद्देश्य क्या है?

1. आत्मिक मानचित्रण एक क्षेत्र को सिर्फ जैसा वह भौतिक रूप से दिखाई देता है वैसा नहीं परन्तु जैसा वह आत्मिक रूप में है वैसा देखने का प्रयास है (मर. 4:22)।
2. यह उन अतिक्रमणों का जिन्हें शैतान ने बनाया है, जो सुसमाचार के प्रसार में अवरोधक बनते हैं, और विशेषकर जो मसीह की उपस्थिति का विरोध करते हैं, ऐसे ऐतिहासिक बंधनों को ढूंढने के लिए निदान करनेवाले साधनों (प्रार्थना, प्रकाशन और सर्वेक्षण) का उपयोग करना है (इफि. 6:12)।
3. यह प्रार्थना मध्यस्थों के लिए वैसा ही है जैसा चिकित्सकों के लिए एक्स-रे होता है (2 कुरिंथि 4:18)।
4. जो मानचित्रण हम विकसित करते हैं वह ऐसा साधन है जो हमें उस क्षेत्र को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने में सहायक होता है।
5. इसका प्रमुख उद्देश्य वह जानकारी देना है जो निरंतर मध्यस्थता को बनाए रखने में और प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। जॉर्ज ओटिस जूनियर इसे "जानकारी-युक्त मध्यस्थता" कहते हैं।
6. यह उस क्षेत्र के निवासियों को शत्रु के मजबूत गढ़ों के चंगुल से मुक्त देखना चाहता है- सर्वप्रथम प्रार्थना में उस बलवान को बांधने के द्वारा सुसमाचार प्रचार को प्रभावशाली बनाना चाहता है (मत्ती 12:28-29)।
7. यह उस क्षेत्र को परमेश्वर की सामर्थ्य से बदला हुआ (2 शमु. 24:25) और परमेश्वर के राज्य को उस क्षेत्र में अधिक महान तरीके से आया हुआ देखना चाहता है।
8. इसका उद्देश्य राष्ट्रों, भू-भागों, और समाजों को शत्रु के बंधन से छुड़ाया गया देखना है (यशा. 58:6)।

आत्मिक मानचित्रण क्या नहीं है :

1. आत्मिक मानचित्रण स्वयं में अन्त नहीं है - यह समाप्ति का एक साधन है। महान आदेश देते समय यीशु ने यह नहीं कहा कि संसार में जाओ और आत्मिक मानचित्रण करो। मानचित्रण परमेश्वर की ईच्छा को पूरा करने का- जीवनों और हृदयों का परिवर्तन करने का - सहायक साधन है।
2. यह एक अकेले आदमी का काम नहीं है परन्तु इसमें टीम वर्क की आवश्यकता होती है।
3. यह मात्र जानकारियों का संग्रह नहीं है; यह किसी क्षेत्र की अलौकिक सक्रियताओं को खोजना है ताकि परमेश्वर के लोग समुचित

रीति से प्रतिक्रिया दे सकें।

4. यह आत्मिक युद्ध नहीं है किन्तु आत्मिक युद्ध के लिये *तैयारी* है।

मानचित्रण (नक्शा) बनाने के लिए हम क्या प्रयास करते हैं?

लक्षित क्षेत्र के भौगोलिक नक्शे में नीचे दिए गए विषयों में से किसी एक और सब को दर्शाइये :

1. आत्मिक 'डेरे' : ऐसे स्थान और क्रियाकलाप जो बंधन को बढ़ाते हैं और व्यक्तियों और समाजों के लिए हानिकारक हैं, जैसे कि:
   - असत्य धर्मो, पंथों (कल्टस) और गुप्तविद्या के स्थान, जैसे मठ, मंदिर और समाधियां, इत्यादि।
   - अलौकिक चंगाई, पुनर्जन्म, पूर्वजन्म उपचार, ज्योतिष विज्ञान, कुण्डलिनी शक्ति और ध्यान केन्द्र। (कुछ खुदरा विक्रेता इस तरह की वस्तुओं को बिना उनके शैतानी प्रभावों को जाने प्रदान कर सकते हैं।)
   - ऐसे स्थान जहां अश्लील साहित्य और सेक्स के अन्य साधन विक्रय किए जाते और जहां वेश्यावृत्ति और अन्य गंदे कार्य किए जाते हैं।
   - ऐसे स्थल जहां जीवन ले लिया जाता है, जैसे कि गर्भपात केन्द्र।
2. स्मारक, जो किसी नगर के ऊपर शक्ति का आह्वान करते हों (युद्ध स्मारक, स्मारक-स्तंभ, इत्यादि) या जहां ऐतिहासिक विनाशकारी घटनाएं (जैसे नरसंहार, संधि का तोड़ा जाना, या लोगों या देश के साथ अन्य कुछ प्रमुख सदमे जैसी बातें) घटीं हों और स्मरण की जाती हों।
3. निरंतर अपराध के क्षेत्र जैसे कि नशीले पदार्थों-दवाइयों को बेचने के तथा जुआ, और अन्य अनैतिक कार्यों को किये जाने के स्थान।
4. कब्रें और मजार (विशेषकर वे जहां लोग पूजा के लिए जाते हैं) और बारंबार होने वाली गंभीर दुर्घटना के स्थल।
5. अंत में मसीही उपस्थिति के स्थान : कलीसियाएं, सुसमाचार केन्द्र, इत्यादि।

पाठ 12
गढ़ों को ढहाना

परिचय : सर्वेक्षण और आत्मिक मानचित्रण छुपे हुए आत्मिक गढ़ों को प्रगट करने में सहायक हो सकते हैं ताकि परमेश्वर की विजयी सामर्थ्य के द्वारा उनका सामना किया जा सके और उन्हें ढहाया भी जा सके। यह ऐसे तत्वों को भी उजागर कर सकता है जो "बलवन्त" (शैतान और उसकी सेना) के अधीन हों।

आत्मिक गढ़ क्या हैं?

1. आत्मिक गढ़ बहुधा एक विश्वास प्रणाली होती है जो परमेश्वर के वचन के विपरीत है और जिसे सत्य मान लिया जाता है या ऐसी परंपरा या प्रथा जो परमेश्वर की इच्छा और मार्गों के विपरीत है।
2. एक मजबूत गढ़ किसी वास्तविक स्थान या प्रभाव की ओर भी इशारा कर सकता है जो उन विश्वासों का या/और परंपराओं का परिणाम है जो परमेश्वर के सत्य के विपरीत हैं। यह ऐसा क्षेत्र होता है (वास्तविक या वैचारिक) जिसे शैतान ने परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों का विरोध करने और उससे लड़ने के लिए स्थापित किया है और गढ़ बनाकर सुरक्षित किया है। ऐसे गढ़ परमेश्वर की इच्छा के विपरीत परिणाम देते हैं या परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए तब तक रूकावट बनते हैं जब तक कि उन्हें उजागर न किया जाए और उन पर जय न पायी जाए।

इन गढ़ों को गिराना अवश्य है - और गिराया जा सकता है -प्रार्थना के द्वारा!

1. पौलुस समझाता है: *"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढ़ा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर के पहिचान के विरोध में उठती हैं, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं,"* (2 कुरिं 10:4-5)।
2. हमारा युद्ध आत्मिक है इसलिए हमें परमेश्वर के सारे हथियार बांध लेने चाहिए (इफि. 6:14-18)।
3. परमेश्वर ने अपने संतानों को प्रार्थना के द्वारा उसकी सामर्थ्य तक आश्चर्यजनक पहुंच दी है (मर. 9:23; याकूब 5:16; 1 तिमोथी 2:1-4)।

बलवन्त मनुष्य को बांधना :

1. मत्ती 12:24-30 में, एक दुष्टात्मा से ग्रस्त मनुष्य को उसके भयानक आत्मिक बंधन से छुटकारा देने के संदर्भ में यीशु ने बलवन्त मनुष्य को बांधने की बात की है।

2. यदि उन आत्मिक बलवन्तों को बांधना जरूरी है ताकि उनके बंधुओं को छुड़ाया जा सके तो किस प्रकार उन्हें पहचाना जाए और उनका प्रतिरोध किया जाए? यदि इस युग के ईश्वर ने खोए हुओं के मनों को अंधा कर दिया है (2 कुरिं. 4:3-4), तो इस आत्मिक वशीकरण को कैसे तोड़ा जाए?
3. इन प्रश्नों के लिये स्पष्ट उत्तर यही है कि इनके लिये निरंतर केन्द्रित प्रार्थना की जाये - ऐसी प्रार्थना जो बलवन्त पुरूष के प्रयासों और रणनीतियों का सामना करती है और उसे उस शक्ति और अधिकार से बांधती है जो मसीह में हमारा है (मत्ती 16:19)।

शैतान के मजबूत गढ़ों और बलबन्त पुरुष पर आत्मिक विजय का दावा करना :

1. जॉर्ज ओटिस जूनियर कहते हैं कि समाज के लिये प्रमुख परिवर्तन तब आते हैं जब परमेश्वर के लोग (किसी बंधन के कारण उत्पन्न) निराशा में एक ऐसे बिन्दु पर आते कि साहस करके निर्णय लेते हैं कि उस बंधन को अब और अधिक नहीं सहेंगे।
2. गंभीर प्रार्थना के द्वारा - परमेश्वर को उसके छुड़ाने वाली और स्वतंत्र करने वाली दया के लिए पुकारने के द्वारा - हम शैतान के मजबूत गढ़ों के शाप से छुटकारे का अनुभव कर सकते हैं (भजन 126:5-6)।

सम्पूर्ण जनसंख्या के हित में प्रार्थना करना :

1. मूसा ने इस्राएल के लिए प्रार्थना और मध्यस्थता की (निर्ग. 32:11-13, 31-32)।
2. दानिय्येल ने परमेश्वर से इस्राएलियों के पश्चाताप के लिये प्रार्थना की (दानि. 9:1-19)।
3. नहेम्याह ने सम्पूर्ण इस्राएल की ओर से प्रार्थना की (नहे.1:6)।
4. लोगों के पूरे समूह पर परमेश्वर की दया होने के लिए प्रार्थना करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं : 1 राजा 8:44-50 में राजा सुलैमान ने; एज्रा 9:6-15 मे एज्रा ने; प्रेरितों 7:60 में स्तिफनुस ने अपने हत्यारों के लिए; इत्यादि।

मसीह में, जिसके पास पृथ्वी का सारा अधिकार है, हम जय पा सकते है और उसके महान आदेश को पूरा कर सकते हैं (मत्ती 28:18)।

1. वह "सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा" राज्य करता है (इफि. 1:21)।
2. हम मसीह में जयवन्त हैं (प्रका. 12:11) और "जयवन्त से भी बढ़कर" हैं (रोमि. 8:37), और परमेश्वर चाहता है कि हम उस बलवन्त का सामना करें और उस पर जय पा लें (लूका 11:21-22)।

पाठ 13
प्रार्थना चहलक़दमी या "प्रेयर वॉक"

परिचय : यहोशू 1:3 में हम यहोशू और इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की एक प्रतिज्ञा पाते हैं : ''उस वचन के अनुसार जो मैंने मूसा से कहा, अर्थात जिस-जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ"। अनेक मसीही इस प्रतिज्ञा का दावा कर रहे हैं; वे उन स्थानों और लोगों के लिए आत्मिक विजय की प्रार्थना और विश्वास कर रहे हैं जहां-जहां वे कदम रख रहे हैं।

प्रार्थना चहलक़दमी ("प्रेयर वॉक") क्या है?

1. प्रेयर वॉक साधारण शब्दों में यह है कि चलते हुए प्रार्थना करना है। (बस या रेलगाड़ी या किसी अन्य साधन से यात्रा करना भी इसमें सम्मिलित है।)
2. प्रार्थना चहलक़दमी किसी स्थान पर चलते हुये उन लोगों के हित में प्रार्थना करना है जो उस स्थान के आस-पास हैं या/और उससे जुड़े हुए हैं (स्वयं को भी सम्मिलित करते हुये), इस विश्वास से कि परमेश्वर का आश्चर्यजनक हस्पक्षेप और प्रबंध प्राप्त होगा।

रणनितिक प्रार्थना चहलक़दमी के स्थान :

1. असत्य धर्मो के भक्ति और क्रियाकलापों के स्थान (मंदिर, मठ, इत्यादि)। परमेश्वर को छोड़कर किसी और की निरंतर आराधना किये जाने के स्थान। (2 राजा 18:4-5 हिजकिय्याह के संदर्भ में देखिये।)
2. अन्य प्रकार के भूत-पिशाचग्रस्त गढ़ के स्थान। भाग्य बताने वालों और काला जादू करने वालों के घरों के सामने की सड़कों पर की गई प्रार्थना चहलक़दमी इन मजबूत गढ़ों को ढहाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य का आह्वान कर सकती है। (प्रेरित 26:18 "कि तू उनकी आँखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि

पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएँ।")।

3. अधिकार के स्थान जैसे कि: शासकीय कार्यालय, कानून व्यवस्था बनाए रखने वाले केन्द्र, न्यायालय इत्यादि।
4. ऊँचे स्थान (1 राजा 18:42 "तब अहाब खाने पीने चला गया , और एलियाह कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया")। दक्षिण कोरिया में अनेक "प्रार्थना के पहाड़" हैं जहां हजारों मसीही प्रार्थना करने के लिए जाते हैं। विश्वासी शिखर पर चढ़ते हुए प्रार्थना करते हैं, या वे किसी एक प्रार्थना स्टेशन में रूककर परमेश्वर की उपस्थिति में बैठते हैं जिसे मार्ग के किनारे बनाया गया है, ऐसे विशेष क्षेत्र जिसमें बैठने की व्यवस्था की गई हैं, कभी कभी ऐसे किसी शांत गुफा में जहां सुंदर पौधे और वातारवरण है।
5. परमेश्वर के उद्देश्य के लिए चुने हुए स्थान, उसे समर्पित किए गए स्थान, जैसे कि चर्च भवन, मिशन कार्यालय, इत्यादि। यदि किसी सार्वजनिक स्थान में साहित्य का वितरण किया जाना है तो अच्छा होगा कि कुछ विश्वासी लोग उस क्षेत्र में चलते हुये प्रार्थना करें जहां साहित्य का वितरण किया जाना है। वे उस स्थान में उस बलवन्त पुरुष (शैतान) के विरूद्ध, और पवित्र आत्मा से उन लोगों के हृदय में कार्य किये जाने के लिए प्रार्थना करें जो सुसमाचार साहित्य प्राप्त करेंगे।
6. वर्तमान और ऐतिहासिक त्रासदी तथा पाप के स्थान (इसका एक उदाहरण यह है कि जब अमेरीकी मसीहियों का एक समूह ने ऐसे स्थान पर चलते हुये प्रार्थना की जहां कभी वर्षो पहले अफ्रीकी गुलाम खरीदे-बेचे जाते थे, तब उन्होंने उस नगर के लोगों और अपने पूर्वजों के इस भयानक पाप की क्षमा के लिए प्रार्थना की।)
7. श्रापित और शैतानी नाम वाले स्थान।
8. बारंबार पाप और भ्रष्ट आचरण के स्थान जैसे कि अश्लील साहित्य के या अश्लीलता करने और वेश्यावृत्ति के स्थान या और कोई अन्य स्थान जहां नशीली दवाओं का विक्रय किया जाता हो।
9. व्यवसायिक स्थान (विशेषकर जहां शराब का विक्रय होता है) और कार्य स्थल (विशेषकर जहां करारबद्ध मजदूर या बाल-मजदूरों का उपयोग किया जाता है।)
10. ऐसी शालाएं जहां मसीही विरोधी शिक्षाओं और विचारों को ऊंचा उठाया जाता है।

पाठ 14

सुसमाचारीय पहुंच में अल्प जाति समूह
(Unreached People Groups - UPG)

मसीही उपस्थिति विहिन तथा सुसमाचारीय पहुंच रहित जाति समूह
(Unreached Unengaged People Groups - UUPG)

सुसमाचारीय पहुंच में अल्प जाति समूह (Unreached People Groups - UPG)
ऐसे लोगों का समूह है जिनमें इवेंजलिकल मसीहियों की जनसंख्या 2 प्रतिशत से भी कम है।
मसीही उपस्थिति विहिन तथा सुसमाचारीय पहुंच रहित जाति समूह (Unreached Unengaged People Groups - UUPG)
ऐसे लोगों का समूह है जिनके मध्य वास्तव में कोई मसीही नहीं पाया जाता
और उनके मध्य कार्य करने के लिए कोई मिशनरी या मिशनरी समूह ने अपना समर्पण नहीं किया है।
(इन समूहों के लिये हिन्दी के नाम उनकी परिभाषा के आधार पर लिये गये हैं। आप उनके अंग्रेजी नामों का उपयोग कर सकते हैं।)

सर्वेक्षण के बड़े लाभों में से एक यह है कि ऐसे जाति समूहों की खोज और पहचान होती है जिनके मध्य अभी भी सुसमाचार पहुंचाया नहीं गया है।
अच्छी बात यह है कि पहले ही अनेक सर्वेक्षण किए जा चुके हैं जिनसे हमें निम्न-लिखित जानकारी प्राप्त हुई है:

1. विश्व में 11,307 जाति समूह हैं (मई 2013 के जोशुआ रिपोर्ट के अनुसार)।
2. इन 11,307 जाति समूहों में से 7,165 समूहों तक अभी भी सुसमाचार पहुंचाया नहीं गया है (मई 2013 के आई.एम.बी. रिपोर्ट के अनुसार 6,945)।

सुसमाचारीय पहुंच में अल्प जाति समूह (Unreached People Groups - UPG)

1. 7000 से अधिक या कम जाति समूहों में से लगभग 383 में जनसंख्या दस लाख से अधिक है।
2. **अकेले भारत में 159 UPGs हैं जिनमें की जनसंख्या दस लाख से अधिक है।**
3. विश्व के 2,165 UPGs में से प्रत्येक में कम से कम 50,000 की जनसंख्या है।
4. 3,665 UPGs में 10,000 से अधिक जनसंख्या है।
5. 3,500 ऐसे UPGs हैं जिनमें जनसंख्या 10,000 से कम है।

मसीही उपस्थिति विहिन तथा सुसमाचारीय पहुंच रहित जाति समूह (Unreached Unengaged People Groups - UUPG)

1. आज विश्व में 3,085 UUPGs हैं (आई.एम.बी. रिपोर्ट के अनुसार)।
2. इनमें से 378 ऐसे हैं जिनमें 1,00,000 से अधिक जनसंख्या हैं।
3. **अकेले भारत में 485 UUPGs जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या 10,000 से अधिक है।**

Unengaged जाति समूहों के लिए कुछ उत्तम वेब साईट :

1. Joshua Project : joshuaproject.net
2. Finishing The Task : finishingthetask.com
3. People Groups : peoplegroups.org
4. GlobalROAR (formerly known as "Adopt-A-People Clearinghouse") globalroar.org
5. International Mission Board (all of the Southern Baptist) : imb.orgèkglobalresearch

और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" मत्ती 24:17

"इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे" मत्ती 9:38

पाठ 15 शोध और विश्वास

परिचय : हमारे लिए सर्वेक्षण का महत्व और स्थान उसी नमूने पर तैयार किया गया है जो इस्राएल के प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के लिए तैयार था। परमेश्वर के द्वारा मूसा को कनान देश का भेद लेने के लिए बारह पुरुषों को भेजने की आज्ञा दी गई थी। स्पष्ट है कि ये बारह पुरुष देश का भेद लेने, बारीक अवलोकन करने, जानकारियों का संकलित करने और निर्णय लेने के लिए प्रशिक्षित थे। अपनी वापसी पर उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी कि उन्होंने क्या-क्या देखा था।

भेदियों में से दस ने "लोगों के ह्दयों को भय से पिघला दिया।" आगे खड़ी बाधाओं के उनके विवरणों ने लोगों को कुड़कुड़ाहट से भर दिया: "भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते। या इस जंगल ही में मर जाते। यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? (गिनती 14:2-3)।

परन्तु यहोशू और कालेब "अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से बात माने" (यहोशू 14:6-8)। उन्होंने "मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, ''हम अभी चढ के उस देश को अपना कर लें, क्योंकि नि:सन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है" (गिनती 3:30)। उनको विश्वास दिलाते हुए उन्होंने यह कहा,, "केवल इतना करों कि तुम बलवा न करो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे, छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो" (गिनती 14:9)।

किस बात ने इन्हें अन्य दस से भिन्न ठहराया? क्या वह यह बात नहीं थी कि दस भेदियों ने स्वयं पर भरोसा किया जबकि यहोशू और कालेब ने यहोवा परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा किया? उन सब ने देश में दानवों को देखा। बहुमत ने स्वयं को उनकी तुलना में कमजोर और अक्षम पाया। तौभी यहोशू और कालेब ने अपना भरोसा कभी नहीं खोया क्योंकि वे **उस एक का** दर्शन कभी नहीं भूले जो सब दानवों से भी अधिक महान है।

यहोशू और कालेब हमें सिखाते हैं कि जानकारी की शक्ति स्वयं जानकारी में बहुत अधिक नहीं होती है किन्तु उनके विश्वास, दृढ़ निश्चय और चरित्र पर निर्भर होती है जिन्हें जानकारियां और ज्ञान सौंपे जाते हैं। दर्शन, समर्पण, साहस, आत्म-बलिदान, दृढ़तापूर्वक स्थिर रहना - ये बातें जो हम इन दो पुरूषों में देखते हैं किसी भी अन्य के लिए प्रेरणा हैं जो महान आदेश को पूर्ण करने के लिए अपना जीवन समर्पित करता है। ऐसे व्यक्तियों का विश्वास निश्चय दिलाता है कि जानकरियों का प्रतिउत्तर सकारात्मक और प्रेरणादायक होगा या विनाशक और दुर्बल करनेवाला होगा।

पुराना नियम का कनान देश पर विजय पाने का कार्य सब देशों के लोगों को चेला बनाने के कार्य के समानान्तर माना जा सकता है। उसी प्रकार से प्रभु ने हमें वह सब नहीं बताया है जिसे हमें सब देशों के लोगों को चेला बनाने के लिए जानना चाहिए। आज पूर्व से कहीं अधिक "भेदियों" को यह खोजने के लिए भेजा जाना चाहिए कि लोग कौन हैं, वे कहां हैं और वे कैसे हैं। यह कोई छोटा कार्य नहीं है। और कलीसिया और देशों का अध्ययन करने की प्रक्रिया में हम अनेकों "दानवों" का सामना करेंगे। हमारा प्रतिउत्तर क्या होगा?

जब विश्वासी लोग किसी देश की कलीसिया और फसल के खेत के संबंध में आंकड़े प्रस्तुत करते हैं तो वे मसीह की देह की सहायता कर सकते है - कलीसिया के अगुवे, सुसमाचार प्रचारक, कलीसिया रोपण करनेवाले, कलीसिया के सदस्यगण कार्य की वह तस्वीर देख पाते हैं जो परमेश्वर का आत्मा करता आया है और करने जा रहा है। यह उन्हें लक्ष्य निर्धारित करने और उनके अपने देश में महान आदेश को पूर्ण करने के लिए योजना बनाने की प्रेरणा दे सकते हैं।

तौभी जब ऐसे लोग आंकड़े प्रस्तुत करते हैं जिनमें विश्वास की कमी है तब वे कलीसिया को असंभव सा दिखने वाले कार्य को आरंभ करने से पीछे खींच सकते हैं। ऐसे स्त्री-पुरूष जो जानकारियां एकत्र करके उन्हें बड़ी निर्भीकता और विश्वास के साथ प्रस्तुत करते हैं वे जानकारियों की असली शक्ति को प्रगट करते हैं।

सर्वेक्षणकर्ता कालेब और यहोशू कभी भी उसको नहीं भूल पाए जिसे स्वर्ग और पृथ्वी का सम्पूर्ण अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18)। इसलिए हमें भी, जो विश्वास करते हैं, हमें परमेष्वर द्वारा "दिए गए उसके अतुलनीय महान् सामर्थ्य" को समझना और उस पर चलना चाहिए (इफि. 1:18-23)।

सर्वेक्षण रणनीति का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। किन्तु महत्वपूर्ण, सटीक, ताजी और चुनौतीपूर्ण जानकारियों को एकत्र करने का कार्य इस बात की गारंटी नहीं है कि कलीसिया आगे आकर कहेगी, "आओ, हम हम चलें और सब जातियों के लोगों को चेला बनाएं क्योंकि हम ऐसा कर सकते हैं।" हमें ऐसी जानकारियों को विश्वास के साथ जोड़ना चाहिए "क्योंकि विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है" (इब्रा. 11:6)।

"परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है" (मत्ती 19:26)।

पाठ 16 परिशिष्ट
भारत के कुछ मसीही उपस्थिति विहिन तथा सुसमाचारीय पहुंच रहित जाति समूह

(Unreached Unengaged People Groups - UUPG)

(जनसंख्या के आंकड़े "फिनिशिंग द टास्क" वेब साइट से लिए गए हैं। - मई 2013)

नीचे दिए जा रहे जाति समूहों में वास्तव में कोई भी मसीही नहीं पाया जाता है, न ही मई 2013 तक किसी मिशन संस्था ने उनके मध्य कार्य करने के लिए समर्पण किया था।

नाम	भाषा	जनसंख्या	धर्म	टिप्पणी
दर्जी	उर्दू	11.00,000	इस्लाम	इस समुदाय का कुल एक तिहाई मुस्लिम दर्जी हैं (अन्य मुख्यत: हिन्दू हैं।) अन्य 3,00,000+ भारत के बाहर पाकिस्तान और बांग्लादेश में रहते हैं। बहुधा वे दर्जी का कार्य करते हैं। वे मुख्यत: उत्तर भारत में, विशेषकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र में रहते हैं।

गड़रिया (या गडेरिया)	हिन्दी	9,63,000	हिन्दू	मूलतः भेड़पालक। अब अधिकांश गड़रिया मिस्त्री का कार्य करते हैं, यद्यपि कुछ अभी भी पशुपालन (भेड़पालन) में लगे हुए हैं। इनकी कुल जनसंख्या में वे आधे उत्तर प्रदेश में और बाकी आधे मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान में बिखरे हुए हैं।
धोबा	बंगाली	7,09,000	हिन्दू	धोबा भारत के मूलनिवासी द्रविड़ों से निकली उपजाति है। बंगाली भाषी बोलने वाले धोबा पश्चिम बंगाल के आस पास निवास करते हैं।
धोबा	मैथिली	6,47,000	हिन्दू	मैथिली बोलनेवाले धोबा बिहार में निवास करते हैं। (कुछ नेपाल में भी रहते हैं।)
गड़रिया	वाघरी	5,10,000	हिन्दू	अधिकांश गड़रिया-बाघरी गुजरात में पाए जाते हैं। उनके मध्य कोई भी मसीही नहीं पाया जाता और न ही उनके मध्य कार्य करने के लिए उनकी भाषा में कोई सहायक साधन (बाइबल इत्यादि) उपलब्ध है।
तुरहा	मैथिली	2,99,000	अन्य	तुरहा मुख्यतः बिहार में रहते हैं और मैथिली और हिन्दी बोलते हैं।
कलाल (कलवार)	मराठी	1,97,000	हिन्दू	कलाल मुख्यतः देशी शराब बनाने और विक्रय करने वाले थे। वे अधिकांशतः उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल में और कुछ मध्य प्रदेश में पाए जाते हैं।
कलाल	मारवाड़ी	1,22,000	हिन्दू	मारवाड़ी बोलनेवाले कलाल अधिकांशतः राजस्थान में निवास करते हैं। उनकी भाषा में जीजस फिल्म और पवित्रशास्त्र के कुछ अंश उपलब्ध हैं किन्तु अभी उनके मध्य कोई कार्य नहीं कर रहा है।
दर्जी	मारवाड़ी	1,13,000	इस्लाम	ऊपर दिए गए उर्दू भाषी दर्जियों की ही तरह हैं सिवाय इसके कि वे मारवाड़ी बोलते हैं जो राजस्थान की एक बोली है। आमतौर पर वे व्यवसायी होते हैं और इसमें बहुधा सफल होते हैं।
मालाकार	बंगाली	54,000	हिन्दू	मालाकार पिछड़ा वर्ग में आने वाला जाति समूह है जो माला बनाता है। वे मुख्यतः पश्चिम बंगाल में निवास करते हैं। (अनेक मालाकार बांग्लादेश में निवास करते हैं।)

नोट : जनसंख्या निकटतम हजार में दी गई है।

पाठ 17
फसल कटाई के लिये श्रमबल की सूचना एकत्रित करना

प्रक्रिया के चरण

1. सर्वेक्षण-कर्मियों का चुनाव करके उन्हें प्रशिक्षित कीजिये।
2. सर्वेक्षण-कर्मियों को ग्रंथालयों, शासकीय एजेंसियों, स्वास्थ्य और समाज कल्याण सेवा केन्द्रों और अन्य स्रोत और स्थानों से आंकड़े जुटाने के लिए प्रेरित कीजिये।
3. उस क्षेत्र के लोगों के भौतिक और सामाजिक विशेषताओं के सर्वेक्षण के लिए शासकीय, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाओं में लगे लोगों से औपचारिक साक्षात्कार कीजिए।
4. ग्रंथालय सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारियों को दर्ज करने के लिये सारे नोट्स और फॉर्म्स को संकलित कीजिए। प्राप्त आंकड़ों के सारणीकरण और विश्लेषण योजना को उपयोग में लाइए।

किस प्रकार के लोगों का साक्षात्कार करें इस पर सलाह:

1. ऐसे लोगों का जो आपके अध्ययन किये जाने वाले विषय पर बोलने के लिए शिक्षित और अनुभवी हैं।
2. ऐसे लोगों का जो आपके द्वारा अध्ययन किये जाने वाली जानकारी की श्रेणी के संबंध में मजबूत मत या विशिष्ट दृष्टिकोण रखते हों।

सर्वेक्षण किये जाने के संबंध में सलाह:

1. उन समुदायों में समय बिताइए जहां आपके चुने हुए जाति समूह के लोग रहते हैं। उनके व्यवहार के तरीकों का अवलोकन कीजिए। उनके सांस्कृतिक मूल्यों और अन्य व्यवहारों को पहचाने का प्रयास कीजिये जो उस जाति समूह को पहचानने में आपकी सहायता करेंगे।
2. निश्चित कीजिये कि आंकड़ों की तारीख, उसके प्रकाशन की तारीख और स्रोत को सदैव लिख लिया जाये।
3. पुस्तकों से ली जाने वाली जानकारी या उद्धरणों की पृष्ठ संख्या, स्रोत, और सारांश वाक्यों को हमेशा दर्ज कर लें।
4. साक्षात्कार दे रहे व्यक्ति का नाम, पद, और उसके साक्षात्कार की तारीख को हमेशा दर्ज करें।
5. आपकी प्रश्नावली को पांच या दस सत्य/असत्य कथनों या एक से अधिक उत्तरों के चुनाव वाले प्रश्नों तक सीमित होना चाहिए। किसी अच्छे साक्षात्कार को दस से अधिक मिनिट तक नहीं चलना चाहिए।
6. जनसांख्यिकी, समाज कल्याण, सांस्कृतिक अध्ययन, अर्थ व्यवस्था, स्थानीय धर्म और राजनीति जैसे विषयों पर साक्षात्कार के लिए स्थापित मार्गदर्शकों का अनुपालन कीजिए।
   - यहां पर दो-दो की टीम अनिवार्य नहीं है।
   - प्रतिदिन के लक्ष्य निर्धारित कीजिए।
   - राजनैतिक और धार्मिक तर्कों में पड़ने से बचने की सवाधानी बरतें। स्मरण रखिए कि आप समाज और अन्य ऐसे विषयों के प्रति लोगों के विचारों को समझने के लिए लोगों का साक्षात्कार कर रहे हैं जिनका कलीसिया के विकास पर प्रभाव पड़ता है।
   - जब आप लोगों के प्रतिउत्तरों को दर्ज कर रहे होते हैं तब तथ्यात्मक जानकारियों और विचारों के मध्य भिन्नताओं को दर्शाइए।
   - और उन लोगों के नाम पता कीजिए जिनका साक्षात्कार किया जाना चाहिए।
7. आप जिस क्षेत्र के लोगों का अध्ययन कर रहे हैं वहां के अनेक आस-पड़ोस और समाजों के लोगों का व्यक्तिगत साक्षात्कार लीजिए। यह ऐसी जानकारियों प्रदान करेगा जो लोगों की आवश्यकताओं, प्रवृत्तियों और प्रतिउत्तर देने की क्षमता का निर्धारण करने में सहायक होंगी।

पाठ 18
लक्षित क्षेत्र में, फसल की कटाई के श्रमबल की स्थिति को समझना

उद्देश्य :

1. आप उस लक्षित क्षेत्र में स्थित सभी डिनामिनेशनों की पहचान करना और उनका पता जानना चाहेंगे।
2. आप पासबानों और कलीसियाओं की संख्या, उनकी उपस्थिति और सदस्यता और उनके विकास दर को जानना चाहेंगे।
3. आप जानना चाहेंगे कि उस संपूर्ण लक्षित क्षेत्र कौनसी कलीसियाएं फैली हुई हैं और वे किन भाषाओं और जाति समूहों में सुसमाचार पहुंचा रही हैं।
4. आप निश्चित करना चाहेंगे कि वे सुसमाचार पहुंचाने के लिये किन तरीकों का उपयोग कर रहे हैं और नए पासबानों के प्रशिक्षण के लिए किन कार्यक्रमों को काम में ला रहे हैं।
5. इस जानकारी के द्वारा आप संम्पूर्ण कलीसिया और प्रत्येक डिनामिनेशन के विकास का खाका खींच सकने में और सुसमाचार प्रचार, कलीसिया रोपण और पासबानी तथा नेतृत्व प्रशिक्षण में प्रभावकारी होने वाली पद्धतियों और नमूनों को पहचानने में सक्षम होंगे।

कटनी श्रमबल को समझने में आपकी सहायता के लिए विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण:

1. **प्रारंभिक सर्वेक्षण :** इस सर्वेक्षण में उस क्षेत्र के सब डिनामिनेशनों और स्वतंत्र कलीसियाओं के नामों की सूची बनाई जाती है, उस वर्ष के लिए कलीसियाओं और सदस्यों की संख्या को निश्चित किया जाता है, और एक से पांच डिनामिनेशनों का गहरा

सर्वेक्षण किया जाता है।

2. **प्राथमिक सर्वेक्षण :** इस सर्वेक्षण में उपरोक्त प्रारंभिक सर्वेक्षण के सभी चरण आते हैं किन्तु इसमें शीर्ष डिनामिनेशनों और स्वतंत्र कलीसियाओं में से 10 से 15 को सम्मिलित किया जाता है।
3. **समय-समय पर नवीनीकरण करना:** इस सर्वेक्षण में शीर्ष के 10 से 15 डिनामिनेशनों पर (या यथासंभव अधिक-से-अधिक पर) प्रत्येक एक या दो वर्षों में जानकारियों को नवीन रीति से एकत्रित किया जाता है, और ऐसे डिनामिनेशनों या पैराचर्च विकास कार्यक्रमों का गहन अध्ययन किया जाता है जो कलीसिा रोपण और नए विश्वासियों को सहभागिता में लाने में प्रभावशाली पाए जाते हैं।

प्रक्रिया :

1. लक्षित क्षेत्र के सब डिनामिनेशनों, पैराचर्च संगठनों और मिशन संस्थाओं के नामों की सूची बनाइए। इन में से चुन लीजिये कि आप किन मसीही संगठनों का सर्वेक्षण करेंगे।
2. कार्यक्षेत्र में सर्वेक्षण करने जाने के पहले प्रत्येक डिनामिनेशन पर ग्रंथालय से यथासंभव सर्वेक्षण पूरा कर लीजिए।
3. कलीसिया के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अगुवों को सर्वेक्षण के उद्देश्य और लक्ष्यों की जानकारी दीजिए।
4. आंकड़ों को दर्ज करने के लिए सर्वेक्षण फॉर्म्स और अन्य साधन तैयार कर लीजिए।
5. सर्वेक्षण करने के लिए सर्वेक्षणकर्ताओं का चयन कीजिए और उन्हें प्रशिक्षण दीजिए। इसलिये कि इन कार्यकर्ताओं को कलीसिया के अगुवों का साक्षात्कार लेना होगा, उन्हें मसीही कार्य का कुछ पूर्वज्ञान होना चाहिए।
6. इन सर्वेक्षणकर्ताओं के लिये सर्वेक्षण समिति या कार्य बल की ओर से एक परिचय पत्र तैयार कर लीजिये जिसका उपयोग वे कलीसिया के अगुवों के समक्ष अपने आप को प्रस्तुत करने में करेंगे। राष्ट्रीय मसीही संस्था, जैसे कि इवेंजलिकल फेलोशिप की ओर से तैयार किया गया पत्र भी सहायक हो सकता है।
7. आपके तैयार किए गए सर्वेक्षण प्रश्नावली का उपयोग करते हुये सर्वेक्षण करने के लिये सर्वेक्षण दल को तैयार कीजिए। जिन अगुवों के साथ साक्षात्कार करना होगा उनके साथ पहले से समय निश्चित कर लीजिए।
8. सर्वेक्षणकर्ताओं से सब फॉर्म्स एकत्र कर लीजिए और उन्हें व्यवस्थित क्रमबद्ध कर लीजिए। प्राप्त आंकड़ों के सारणीकरण और विश्लेषण योजना को उपयोग में लाइए। प्रत्येक डिनामिनेशन के विकास की शैली और गति का निर्धारण कीजिए।
9. प्रारंभिक जानकारियों की विवेचना के पश्चात् डिनामिनेशनों के प्रमुख अगुवों के साथ दूसरी बार साक्षात्कार का समय लीजिए। उनसे अनुरोध कीजिये कि वे उनकी अपनी समझ और अनुभव के आधार पर डिनामिनेशनों के विकास और इतिहास का विवरण करें। इस डिनामिनेशन के द्वारा परमेश्वर के अद्‌भुत कार्य के संबंध में व्यक्तिगत वृत्तांतों और गवाहियों की खोज कीजिए। कलीसिया के विकास के या विकास के अवरूद्ध होने के कारण के निर्धारण में सहायक होने हेतु यह जानकारी महत्वपूर्ण है।

पाठ 19
फसल कटाई के लिये श्रमबल स्थिति को बेहतर रीति से समझने की सलाहें

सर्वेक्षण प्रश्नावली तैयार करने के संबंध में कुछ सलाहें:

1. डिनामिनेशन के सर्वेक्षण फॅार्म में 20-30 प्रश्न हो सकत हैं। ऐसे प्रश्नों को सम्मिलित करें जो सर्वेक्षण के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक हों। प्रश्न पत्र इस तरह तैयार कीजिए कि उसे 30-45 मिनट में पूरा किया जा सके।
2. प्रश्न स्पष्ट तथा असंदिग्ध होने चाहिए। ऐसे शब्दों का चयन कीजिए जिन्हें अधिकांश डिनामिनेशनों के अगुवे समझनें में सरल और स्वीकारयोग्य पाएंगे। सर्वेक्षण आरंभ करने के पूर्व अपने प्रश्नावली को दो या तीन अगुवों पर आजमा लीजिये। इस से यह समझने में सहायता होगी कि आपके प्रश्न समझने के योग्य हैं कि नहीं।

ग्रंथालय सर्वेक्षण के लिए कहां से जानकारी प्राप्त करे इसके संबंध में सलाहें:

1. डिनामिनेशनों के त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और मासिक प्रतिवेदन या प्रकाशन (जैसे कि डिनामिनेशनों की वार्षिक पुस्तिकाएं)।
2. उस कलीसिया या विशिष्ट डिनामिनेशन के इतिहास, विकास और वर्तमान दशा पर लिखा गया साहित्य।
3. राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या डिनामिनेशन संबंधित कलीसियाई निर्देशिकाएं।

किस तरह के कलीसियाई अगुवों का साक्षात्कार करें इस पर सलाहें :

1. डिनामिनेशनों के प्रधान अधिकारियों या संचालकों, बड़ी या विकासशील कलीसियाओं के प्रमुख पासबानों, और मिशन संस्थाओं के संचालकें और मिशनरियों का साक्षात्कार कीजिये।
2. क्षेत्रिय तथा जिले के पर्यवेक्षकों का।
3. डिनामिनेशनों में से प्रमुख ले-लीडर्स का।
4. सांख्यिकीविद् (क्रमबद्ध गणना करने में निपुण व्यक्ति), सचिव या दस्तावेज अभिरक्षकों का (रिकार्ड कीपर)।
5. मसीही शिक्षा कार्यक्रमों के अगुवे, जैसे कि सेंमिनरियों के संचालक और शिक्षक इत्यादि का।
6. मसीही समाज सेवा संस्थाओं के संचालकों का।

साक्षात्कार करने के संबंध में सलाहें:

1. जब कभी संभव हो, क्षेत्रिय सर्वेक्षणकर्ताओं को दो-दो के दल में ही भेजिए। साक्षात्कार के दरम्यान एक प्रश्न पूछेगा और दूसरा उनके प्रतिउत्तरों को लिपिबद्ध करता रहेगा। तथापि यह हर समय संभव और व्यवहारिक नहीं हो सकता।
2. डिनामिनेशन के अगुवे को खोजिए। यदि उनसे मुलाकात संभव न हो तो किसी दूसरे प्रमुख व्यक्ति से मिलिए जिनके पास आपके प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं। यदि कोई भी उपलब्ध नहीं हो तो अगुवे की उपलब्धता का समय खोजिए। किसी अन्य दिन आइए जब वे उपलब्ध होंगे।
3. जब कभी संभव हो तो डिनामिनेशन के अगुवे से मिलने का समय पहले से निर्धारित कर लें। हमेशा ठहराये गये समय को निभाइये।।
4. सदैव विनम्र बने रहीये। स्वयं का परिचय दीजिये, आप क्या कर रहे हैं इसे स्पष्ट कीजिए और अगुवे को अपना परिचय पत्र दीजिये। स्पष्ट कीजिये कि परमेश्वर क्या कर रहा है उसे समझने के लिए आपको उनकी सहायता की आवश्यकता है जिससे यह दूसरों के लिए भी आशीष का कारण बन सके।
5. अपनी प्रश्नावली से परिचित रहिये। हमेशा प्रश्नों को एक ही क्रम में पूछिये। अगुवे के उत्तर से कभी भी असहमति ना दिखाइए। यथासंभव सिर हिलाकर, या जो आपने उनसे सुना है उसे दोहराकर दिखाइए कि आप रूचि ले रहे हैं और समझ रहे हैं।
6. सिद्धान्त, थियालॉजी या राजनीतिक बातों पर वादविवाद और तर्क करने में कभी भी मत जाइये। आप वहां उस अगुवे से सीखने के लिए गए हैं। बातचीत को सर्वेक्षण के प्रश्नों तक ही सीमित रखिए।
7. प्रतिउत्तरों को प्रश्नावली में ही सावधानीपूर्वक दर्ज कीजिए। उन प्रश्नों पर वापस लौटिए जिन्हें आप छोड़ दिए थे। उनसे उन उत्तरों को स्पष्ट करने कहिए जिन्हें आपने नहीं समझा है। उत्तरों को स्पष्ट लीखिए। जब आप उत्तरों को लिख रहे हैं तो उन्हें दोहराइए। यह पक्का कर लें कि आप जिस व्यक्ति का साक्षात्कार ले रहें हैं उनका नाम और साक्षात्कार की तारीख अवश्य दर्ज लिये हैं।
8. उस अगुवे से अन्य और लोगों के नाम और पते पूछिए जिनका आपको साक्षात्कार लेना चाहिए। ये क्षेत्रीय अगुवे, प्रमुख पासबान या सुसमाचार प्रचारक हो सकते हैं जिन्हें इस बात की अच्छी समझ हो कि परमेश्वर उनके क्षेत्र में क्या कर रहा है।

पाठ 20
लक्षित क्षेत्र में स्थानीय कलीसियाओं की स्थिति को समझना

उद्देश्य :

1. आप प्रत्येक समुदाय में पाए जाने वाली स्थानीय कलीसिया या मण्डली की पहचान करना और उसे खोज निकालना चाहेंगे।
2. आप कलीसिया भवनों की कुल संख्या, उनकी बैठने की क्षमता और यथार्थ में उपस्थित हो रहे आराधकों की संख्या जानना चाहेंगे।
3. आप निश्चय ही जानना चाहेंगे कि कौन से जाति समूहों तक और समाज के कौन से वर्गों तक सुसमाचार पहुंचाया जा रहा है।
4. आप निश्चय ही जनना चाहेंगे कि नई कलीसियाएं किस तेज गति से और लगातार रोपित की जा रहीं हैं।
5. इन जानकारियों के द्वारा आप सुसमाचार न पहुंचाये गये और कलीसिया-विहीन समुदायों और जाति समूहों की पहचान कर सकेंगे ताकि उन क्षेत्रों और लोगों की पहचान कर सकें जो सुसमाचार के लिए खुले हुए हैं और उनमें कलीसिया रोपण का लक्ष्य बना सकें।

सर्वेक्षण में सम्मिलित कुछ चरण या:

1. आप देश भर में ज्ञात सब कलीसियाओं के नाम और पतों की सूची बना लीजिए। आप निश्चय कर लीजिए कि आप इन कलीसियाओं में से कितनी और कौनसी कलीसियाओं का सर्वेक्षण करेंगे।

2. प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र के कलीसियाओं के अगुवों को सर्वेक्षण के उद्देश्य की सूचना दीजिए।
3. आंकड़ों को दर्ज करने के लिए सर्वेक्षण प्रपत्र और अन्य सहायक सामग्री का प्रबंध कर लीजिए।
4. सर्वेक्षण पूरा करने के लिए फील्ड सर्वेक्षणकर्ताओं का दल बनाकर उन्हें प्रशिक्षण दीजिए।
5. उस क्षेत्र के अधिकतम पासबानों (जैसा कि पास्टर्स फेलोशिप) के द्वारा ज्ञात और सम्मानित डिनामिनेशन के अगुवों और मसीही संगठनों से परिचय पत्र लीजिए।
6. स्थानीय कलीसियाओं का सर्वेक्षण करने के लिए सर्वेक्षणकर्ताओं को गतिशल कीजिए। नयी खोजी गई कलीसियाओं को भी सर्वेक्षण की सूची में जोड़ लीजिए।
7. सर्वेक्षणकर्ताओं से सारे सर्वेक्षण प्रपत्र एकत्र करके व्यवस्थित की लीजिए। प्राप्त आंकड़ों के सारणीकरण और विश्लेषण योजना को उपयोग में लाइए।

सावधानी! सब मण्डलियों के स्थानीय सर्वेक्षण के लिए कलीसिया के बड़े सहयोग की आवश्यकता होती है। इसमें अधिक लम्बा समय भी लगता है (1 से 4 वर्ष, देश पर निर्भर करते हुये)। इसलिए हम निम्नलिखित सुझाव देते हैं:

1. दूसरे चरण में, नमूने के तौर पर मात्र स्थानीय कलीसिया (सब कलीसियाओं के 3-5 प्रतिशत) का ही सर्वेक्षण कीजिये।
2. तीसरे चरण में स्थानीय कलीसिया सर्वेक्षण को पूरा कीजिए।
3. आप आवश्यक जान सकते हैं कि दूसरे चरण में ही प्राथमिक डिनामिनेशनल सर्वेक्षण के बदले स्थानीय कलीसिया का पूर्ण सर्वेक्षण किया जाये। इसे मात्र तब ही करें जब उस देश के अधिकतर डिनॉमिनेशन सक्रिय सदस्यों, उनकी उपस्थिति और मण्डलियों के सटीक आंकड़े नहीं रखते हैं।

सर्वेक्षण करने के दो से तीन सप्ताह पहले प्रमुख पासबानों को सर्वेक्षण की सूचना देने का पत्र भेजिए। सर्वेक्षण दल को भी एक पत्र दीजिए जिसे वे साक्षात्कार के समय आवश्यकतानुसार उपयोग ला सकेंगे।

सर्वेक्षण प्रश्नावली तैयार करना :

1. स्थानीय कलीसिया सर्वेक्षण प्रपत्र में प्रश्नों की संख्या 5-6 तक ही सीमित रखिये। मात्र उन्हीं प्रश्नों को सम्मिलित कीजिये जो सर्वेक्षण के उद्देश्य को पूर्ण करते हों। प्रश्नावली ऐसी हो जिसे 15-20 मिनट में पूरा किया जा सके।
2. प्रश्न स्पष्ट होने चाहिए। सरल शब्दों का चुनाव करें ताकि साक्षात्कार देनेवाले सरलता से समझ सकें।
3. प्रश्नों को स्थानीय लोगों की भाषा में अनुवाद कर लीजिए जहां आप साक्षात्कार के लिए जाने वाले हैं।
4. सर्वेक्षण आरंभ करने के पूर्व अपनी प्रश्नावली को पांच से दस लोगों पर आजमा लीजिए। इससे यह पक्का होगा कि आपके प्रश्न समझने योग्य हैंया नहीं।

पाठ 21
जनसांख्यिकीय तथा संजातिय सर्वेक्षण

अनेक प्रकार की जानकारियां हैं जिनका समझा जाना और सर्वेक्षण किया जाना होता है ताकि लक्षित क्षेत्र की आत्मिक आवश्यकताओं और अनुकूल समयों की स्पष्ट और सटीक समझ प्राप्त की जा सके:

1. जनसांख्यिकीय (डीमग्रैफिक - जनसंख्या वितरण, स्थान और घनत्व) और भौगोलिक परिस्थिति।
2. संजातिय (एथनिक) और जाति समूह
3. कलीसिया का बल (या कमजोरी) - उपलब्ध "श्रमबल"।

भौगोलिक और जनसांख्यिकीय घटकों को समझना :

1. आप उस लक्षित क्षेत्र में लोगों के जनसांख्यिकी विवरण/वितरण (दूसरे शब्दों में उस क्षेत्र में कितने लोग रहते हैं और वे कहां निवास करते हैं) को अंकित करना चाहेंगे।
2. आप उस लक्षित क्षेत्र के भौगोलिक वितरण को पहचानना और सुसमाचार सुनने की आवश्यकता वाले विभिन्न समुदायों (शहरी और ग्रामीण) की गिनती करना, खोज करना और उनकी संख्या को अंकित करना चाहेंगे।

3. इस जानकारी के साथ आप प्रत्येक समुदाय को पहचान पायेंगे और सुसमाचार सुनने की आवश्यकता वाले प्रत्येक जातिय समूह को पहचानेंगे, खोज निकालेंगे और उनका निर्धारण करेंगे।

जनसांख्यिकीय और भौगोलिक सर्वेक्षणों के चार प्रकार :

1. **प्रारंभिक जनसांख्यिकीय अध्ययन** - इसमें ग्रंथालय से उस क्षेत्र की कुल जनसंख्या के आवश्यक आंकड़े, संख्या, विकास, घनत्व और लोगों के वितरण सम्बंधित आंकड़ों पर सर्वेक्षण करना होता है।
2. **प्रारंभिक भौगोलिक अध्ययन** -इस अध्ययन में भौगोलिक उपविभाजनों का विवरण देना होता है और राजनैतिक या प्रशासनिक ढांचे को समझना होता है। इसमें उस क्षेत्र के भौतिक और राजनैतिक चरित्र का विवरण भी आता है।
3. **उस क्षेत्र का बुनियादी अध्ययन** - इस अध्ययन में लोगों के भौतिक और सामाजिक गुणों और आवश्यकताओं को खोजना सम्मिलित होता है।
4. **जनसांख्यिकी का नवीनीकरण करना** - यह उस क्षेत्र का सर्वेक्षण प्रोजेक्ट होता है ताकि विभिन्न स्तरों पर आवश्यक नवीन आंकड़ों को एकत्रित किया जाये।

लक्षित क्षेत्र के संजातिय और जाति-समूह के गति विज्ञान को समझना :

1. आप उस क्षेत्र की प्रत्येक भाषा और जाति समूह को पहचानना और उनका स्थान निर्धारित करना चाहेंगे।
2. आप जानना चाहेंगे कि प्रत्येक समूह में कितने लोग हैं।
3. आप प्रत्येक समूह के बुनियादी गुणों का (धार्मिक पृष्ठभूमि, सामाजिक संगठन और अन्य सांस्कृतिक विशेषताओं का) वर्णन करना चाहेंगे।
4. आप मसीहीयत के प्रति उनके ज्ञान और प्रतिउत्तर की सीमा को निश्चय जानना चाहेंगे और सुसमाचार संदेश के प्रति उनके खुलेपन को मापना चाहेंगे।
5. आप उनके स्वास्थ्य और सामाजिक आवश्यकताओं को खोजना चाहेंगे ताकि कलीसिया उन्हें पूरा करके यीशु के प्रेम और सामर्थ्य को प्रगट कर सके।
6. यह जानकारी आपको प्रत्येक विशेष जाति समूह को पहचानने में सहायता करेगी जिसे अपनी भाषा, संस्कृति और परिस्थिति में सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है। आप प्रत्येक समूह के गुणों की पहचान कर पाने में सक्षम होंगे जिससे आपको इन लोगों के मध्य सुसमाचार सुनाने का तरीका विकसित करने और उनके मध्य कलीसिया स्थापित करने में सहायता होगी।

दो प्रकार के संजातिय और जाति समूह सर्वेक्षण:

1. **प्रारंभिक अध्ययन** -इस अध्ययन में देश में ज्ञात समस्त भाषाओं और जाति समूहों की सूची बनाना होता है जिसके लिए देश में उनकी संख्या, विकास और विस्तार के आंकर्डे जमा करना होता है, और उनके मध्य किस तरह की कलीसियाएं पायी जाती हैं (यदि है तो) और वे कौनसी हैं जो विकास कर रही हैं की जानकारी का निर्धारण करना होता है।
2. **गहन अध्ययन** - इस अध्ययन में प्रत्येक समूह का विस्तृत प्रोफाईल बनाना होता है (विशेषकर उनका जिनके मध्य कलीसिया की आवश्यकता सर्वाधिक है, यह जनसंख्या और कलीसिया के अनुपात के आधार पर होना चाहिए), और उसके गुणों का वर्णन करना होता है जो फिर आगे उनके मध्य कलीसिया रोपण की परिपूर्णता की दिशा में यथासंभव रणनीतियों और पद्धतियों को विकसित करने में उपयोग में लाया जा सकता है।
3. यह महत्वपूर्ण है कि पर्याप्त विस्तृत जानकारी एकत्रित की जाये यह बताने के लिये कि वे लोग कौन हैं और उन तक सुसमाचार के संदेश को लेकर कैसे पहुंचा जा सकता है।

पाठ 22
जनसांख्यिकीय/संजातिय सर्वेक्षण करना

अध्ययन के चरण :

1. पूरे देश में बोली जानेवाली ज्ञात भाषाओं की सूची बनाइए। उन भाषाओं का वर्गीकरण कीजिये कि उनमें से कौनसी स्वदेश में ही उत्पन्न हुई हैं और कौनसी प्रवासी या विदेशी निवासियों के द्वारा बोली जाती हैं। इसे ग्रंथालय सर्वेक्षण द्वारा और भाषा-वैज्ञानिक कार्य करने वाले संगठनों के साथ साक्षात्कार करके पूरा किया जा सकता है।
2. देश में ज्ञात समस्त जाति समूहों की सूची बनाइए और उनके उन प्राथमिक कारणों को दर्शाइए जिनके द्वारा उन्हें विशिष्ट जाति समूह माना जाता है।

3. उन समुदायों और क्षेत्रों का पता लगाइए जहां पर प्रत्येक भाषा और जाति समूह की महत्वपूर्ण उपस्थिति है। तय कीजिये कि प्रत्येक समुदाय में कितने जाति समूहों में कितने लोग पाए जाते हैं और कितने हैं जो प्रत्येक भाषा को बोलते हैं।
4. उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि और मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं का निर्धारण करने के लिये, प्रत्येक समूह में से अनेक व्यक्तियों का नमूने के तौर पर सर्वेक्षण कीजिए।
5. सर्वेक्षणकर्ताओं को नियुक्त करना :
   - सर्वेक्षण करने के लिये कार्यकर्ताओं को पाने हेतु मिशनरी समुदाय अच्छा स्रोत है - विशेषकर वे जो जाति समूहों से या भाषाई कार्य से पहले से परिचित हैं।
   - वे स्थानीय पासबान या कलीसिया के सदस्य भी अच्छा स्रोत हो सकते हैं जो एक या अधिक भाषा समूह या जाति समूह से परिचित हैं।

आपके द्वारा एकत्रित की जानेवाली जानकारियों को दर्ज करने के लिए प्रपत्र (फॉर्म्स) और चार्ट तैयार करना :

1. भौगोलिक और जनसांख्यिकीय आंकड़ों को दर्ज करने के लिए प्रपत्र और चार्ट तैयार कीजिये।
   - भौगोलिक जानकारी में प्रत्येक भौगोलिक स्तर के भौतिक और राजनैतिक गुणों का विवरण आता है।
   - जनसांख्यिकीय जानकारी में कुल जनसंख्या, पुरूषों, स्त्रियों और युवाओं की संख्या, शहरी और ग्रामीण जनसंख्या, साक्षरता दर, समुदायों की संख्या और उनका आकार (माप) आता है।
2. पुस्तकों से प्राप्त विवरणात्मक जानकारियों को दर्ज करने के लिए उचित प्रपत्र तैयार कीजिए। आप इसे छोटे-छोटे नोट्स-कार्ड्स अथवा कागज के पुर्जों का उपयोग करते हुये कर सकते हैं। देश का इतिहास, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक वातावरण और धार्मिक पृष्ठभूमि के बारे जानकारियां दर्ज करने के लिए भी इनका उपयोग कीजिये।
3. प्रमुख क्षेत्रिय और स्थानीय हस्तियों के अनौपचारिक साक्षात्कार में उपयोग करने हेतु विभिन्न प्रकार की छोटी प्रश्नावलियों को तैयार कर लीजिये। शासकीय अधिकारियों का (क्षेत्रिय और नगर योजना बनाने वाले और सांख्यिकी अधिकारियों का भी), स्वास्थ्य और समाज सेवा से जुड़े लोगों, धार्मिक अगुवों और अन्य अधिकारियों का भी साक्षात्कार लीजिए।
4. इन साक्षात्कारों के लिये टेप रिकॉर्डर का उपयोग कीजिये और बाद में उन्हें लिख लीजिये। एक क्षेत्र या समुदाय के लोगों की सुसमाचार के प्रति रूचि, जागरूकता और प्रतिउत्तर की संभावित क्षमता को जानने के लिए नमूने के तौर पर कुछ व्यक्तियों का साक्षात्कार लीजिए।
5. जाति समूह सर्वेक्षण के क्षेत्र में अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है। तथापि, अन्य अनेक स्रोत उपलब्ध हैं जिनकी हम सिफरिश करते हैं जो कुछ विशेष जाति समूहों के मध्य सर्वेक्षण करने हेतु प्रपत्र और प्रश्नावली विकसित करने के लिये आपकी सहायता कर सकते हैं।
   - *''दैट एवरीवन मे हियर : कार्य पुस्तिका''*, एड डेटन द्वारा लिखित और एम.ए.आर.सी. (मिशन्स एडवान्स्ड रिसर्च एण्ड कम्युनिकेशन सेन्टर) द्वारा प्रकाशित। यह कार्य पुस्तिका, जाति समूह का वर्णन करने हेतु सर्वेक्षण और विश्लेषण करने के चरणों को जानने में आपकी अगुवाई करेगी और उस समूह तक पहुंचने के लिये किन कदमों को लिया जा सकता है इसे निर्धारित करने में आपकी सहायता करेगी।
   - *''फोकस! द पावर ऑफ द पिपुल ग्रुप थिंकिंग''*, जॉन रॉब द्वारा लिखित, और एम.ए.आर.सी. द्वारा ही प्रकाशित। यह पुस्तिका उन गुणों को समझने में आपकी सहायता करेगी जो किसी एक जाति समूह को परिभाषित करते हैं।
   - इन स्रोतों के अतिरिक्त हम *ग्लोबल मैपिंग इंटरनेशनल, आइ.एन.सी.*, द्वारा विकसित ''द पीपुल प्रोफाइल'' प्रपत्र की भी सिफरिश करते हैं। जाति समूहों पर प्राप्त बहुत सारी जानकारियों को सारांश रूप में प्रस्तुत करने के लिए यह एक अतिउत्तम सर्वसमावेशी प्रपत्र है।

पाठ 23
सर्वेक्षण कार्यान्वित करने संबंधित सलाहें

1. जब कभी संभव हो, क्षेत्रिय सर्वेक्षणकर्ताओं को दो-दो के दल में ही भेजिए। साक्षात्कार के दरम्यान एक प्रश्न पूछेगा और दूसरा उनके प्रतिउत्तरों को लिपिबद्ध करता रहेगा। (नोट: हर बार ऐसा होना संभव नहीं हो सकता।)
2. दिन में जितना व्यवहारिक हो उतनी सुबह कार्य आरंभ कर दें। आप लक्ष्य निर्धारित कर लें कि प्रत्येक दिन आप कितने साक्षात्कार करना चाहते हैं। किसी एक क्षेत्र की समस्त कलीसियाओं को एक ही दिन में पूरा करने का प्रयास कीजिए ताकि यदि लम्बी दूरी हो तो आने-जाने में समय व्यर्थ न जाए। भोजन के समय साक्षात्कार लेने से बचिए।

3. कलीसिया तक पहुंचने के लिए जो भी उपलब्ध मानचित्र हो उसका उपयोग कीजिए। स्थानीय लोगों से रास्ता जानने में मदद लीजिए। कलीसिया के पासबान या अगुवे से बातचीत कीजिए। यदि वह उपलब्ध न हों तो कलीसिया के प्राचीन या सेवक से बात करने का प्रयास कीजिए। यदि कोई भी उपलब्ध न हों तो किसी से पासबान की समय-सारिणी पूछिये। किसी अन्य दिन वापस आइए।
4. सदैव विनम्र बने रहें। स्वयं का परिचय दीजिये, आप क्या कर रहे हैं इसे स्पष्ट कीजिए और अगुवे को अपना परिचय पत्र दें। स्पष्ट कीजिये कि परमेश्वर क्या कर रहा है उसे समझने के लिए आपको उनकी सहायता की आवश्यकता है जिससे यह दूसरों के लिए भी आशीष का कारण बन सके।
5. अपनी प्रश्नावली से परिचित रहिये। हमेशा प्रश्नों को एक ही क्रम में पूछिये। अगुवे के उत्तर से कभी भी असहमति न दिखाइए। यथासंभव सिर हिलाकर या जो आपने उनसे सुना है उसे दोहराकर दिखाइए कि आप रूचि ले रहे हैं और समझ रहे हैं।
6. सिद्धान्त, थियालॉजी या राजनीतिक बातों पर वादविवाद और तर्क करने में कभी भी मत जाइये। आप वहां उस अगुवे से सीखने के लिए गए हैं। उन्हें प्रश्नों का उत्तर देते हुये विषय बदलने की सीमा में मत जाने दीजिए।
7. प्रतिउत्तरों को प्रश्नावली में ही सावधानीपूर्वक दर्ज कर लीजिए। उन प्रश्नों पर वापस लौटिए जिन्हें आपने छोड़ दिया था। उनसे उन उत्तरों को स्पष्ट करने कहिए जिन्हें आपने नहीं समझा है। उत्तरों को स्पष्ट लीखिए। जब आप उत्तरों को लिख रहे हैं तो उन्हें जोर से पढ़िये ताकि गलतफहमी को टाला जा सके। यह पक्का कर लें कि आप जिस व्यक्ति का साक्षात्कार ले रहें हैं उनका नाम और साक्षात्कार की तारीख अवश्य दर्ज लिये हैं।
8. पासबान के साथ मण्डलियों की सूचि को एक बार और दोहरा लीजिए। यदि कोई छूट गया हो तो उसे भी सूची में जोड़ने का उनसे निवेदन कीजिये। इन जोड़े गये नामों को सर्वेक्षण संयोजक को दीजिए ताकि वे इन्हें भी सर्वेक्षण समय-सारिणी में सम्मिलित कर सकें।

चर्चा के लिये प्रश्न :

1. आपके द्वारा कलीसिया रोपण प्रयासों के लिए निश्चित किया गया क्षेत्र कौनसा है? आपके क्षेत्र में "फसल की कटनी का खेत" और "कटाई के लिये श्रमबल" के बारे जानकारियां पक्की करने के लिए आप के पास कौन से तरीकें हैं जिनका उपयोग आप कर सकते हैं? कौनसे स्रोत उपलब्ध हैं?
2. फसल कटाई के खेत के बारे में जो जानकारियां आपको चाहिए उन्हें एकत्रित करने के लिए सर्वोत्तम तरीका क्या है? आपके लक्षित क्षेत्र में लोगों तक पहुंचने के लिए सर्वाधिक उचित तरीका क्या है? अपने सर्वेक्षण करने के दरम्यान् आप उनके मध्य सेवकाई कैसे कर सकते है?
3. कलीसिया रोपण के आपके प्रयासों में आने वाले सबसे पहले क्रमांक के अवरोध का उल्लेख कीजिये। इस अवरोध को परिभाषित करने, संबोधित करने और हटाने के लिए कौनसा सर्वेक्षण आवश्यक है? यदि उस अवरोध को हटा दिया जाये तो आपका कलीसिया रोपण का कार्य कैसे प्रगति करेगा?
4. "कार्य की बुलाहट" क्या है? "कार्य की बुलाहट" को कैसे निर्माण किया जाता है? आपके क्षेत्र में "कार्य की बुलाहट" क्या हो सकती है?
5. अपना सर्वेक्षण पूरा हो जाने पर आप इसे किसके साथ बांट सकेंगे? आप इसे किस तरह प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि अन्य कलीसियाएं या मसीही संस्थाएं आपके क्षेत्र में कलीसिया रोपण के दर्शन को प्राप्त करेंगी?

"मिशनरी सर्वेक्षण आत्मिक युद्ध है। उन अनेक स्थानों में जहां हम जाएंगे शैतान ने हजारों वर्षो से अपना प्रभुत्व बना रखा है, और वह अपने रहस्यों का त्याग करने को, या परमेश्वर के राज्य के लिये रणनीतिक जानकारियों का लाभ प्राप्त होने देने को तैयार नहीं है।
''सर्वेक्षण कायरों के लिए नहीं है, किन्तु इसे नम्र लोगों के द्वारा सफलतापूर्वक किया जा सकता है। यह बिल्कुल भी सरल नहीं है, किन्तु यह पूरा-पूरा संभव है जब इसे परमेश्वर के सामर्थ्य में, पवित्र आत्मा के द्वारा, उसके राज्य के लिए पूरा किया जाए।" - नीयी ग्बादे (कलवरी मिनिस्ट्रीज़, नाइजीरिया)